चीन में डॉ. कोटनिस



डॉ. द्वारकानाथ शांताराम कोटनिस एक भारतीय डॉक्टर थे, जो सितंबर 1938 में जापान के खिलाफ जंग में चीनी लोगों की मदद करने के लिए चीन जाने वाले एक मेडिकल मिशन में शामिल हुए थे। चीन में अपने पांच साल के रहने के दौरान, उन्होंने हजारों घायल सैनिकों और आम लोगों का इलाज किया। लड़ाई के मैदान में ज़्यादा काम और खराब सेहत की वजह से उनकी मौत हो गई। उन्होंने चीन की आज़ादी के लिए अपनी जान दे दी। यह किताब डॉ. कोटनिस की हिम्मत, क्रांतिकारी भावना और इंटरनेशनल सोच को श्रद्धांजलि देती है।

चीन में डॉ. कोटनिस

रूपांतरण: ज़ियांगोंग

चित्र: जिन हेडे

हिंदी: अरविन्द गुप्ता

(मई 2026)

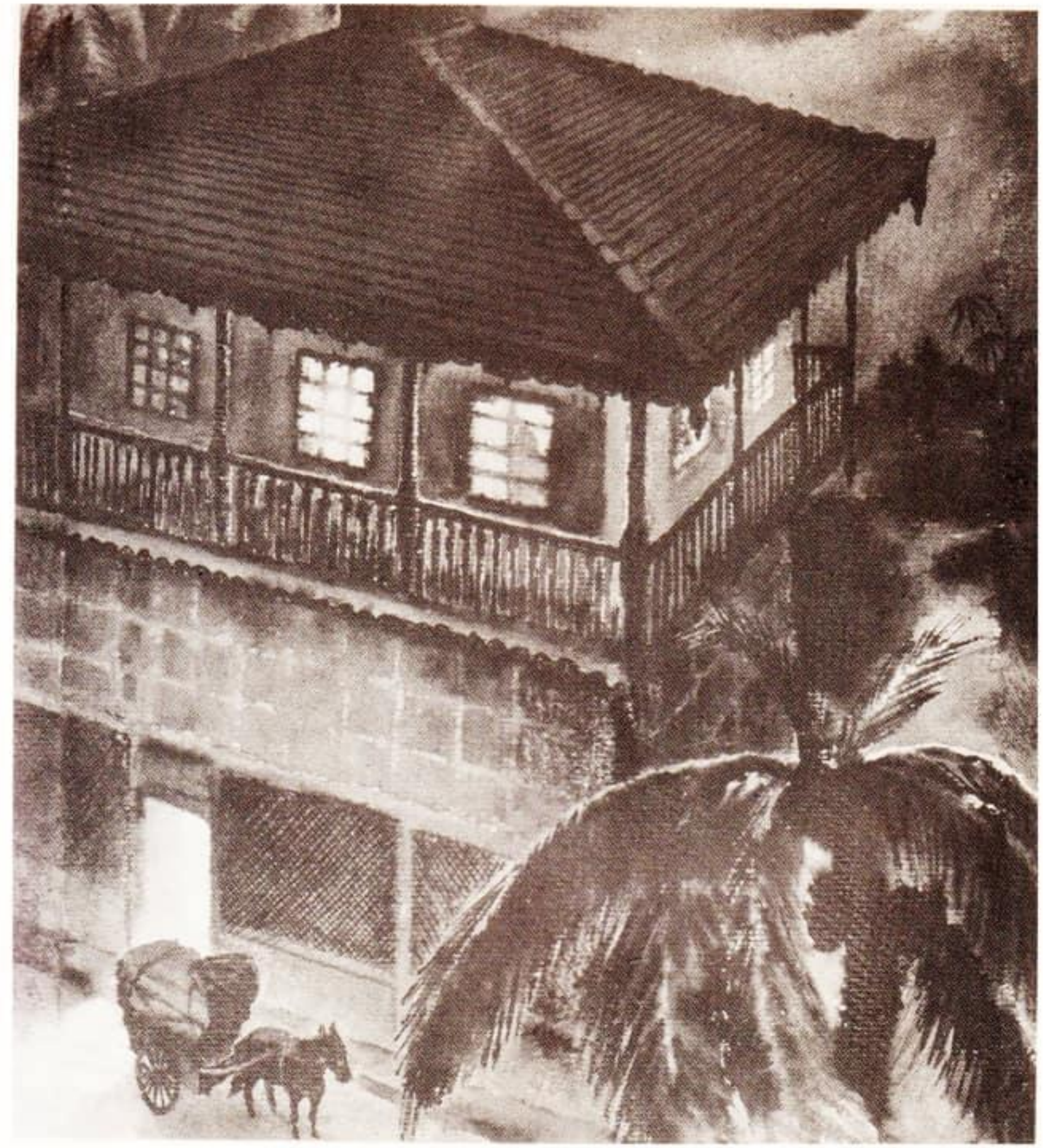
प्रथम संस्करण 1987

पेपरबैक: ISBN 0-8351-1899-1

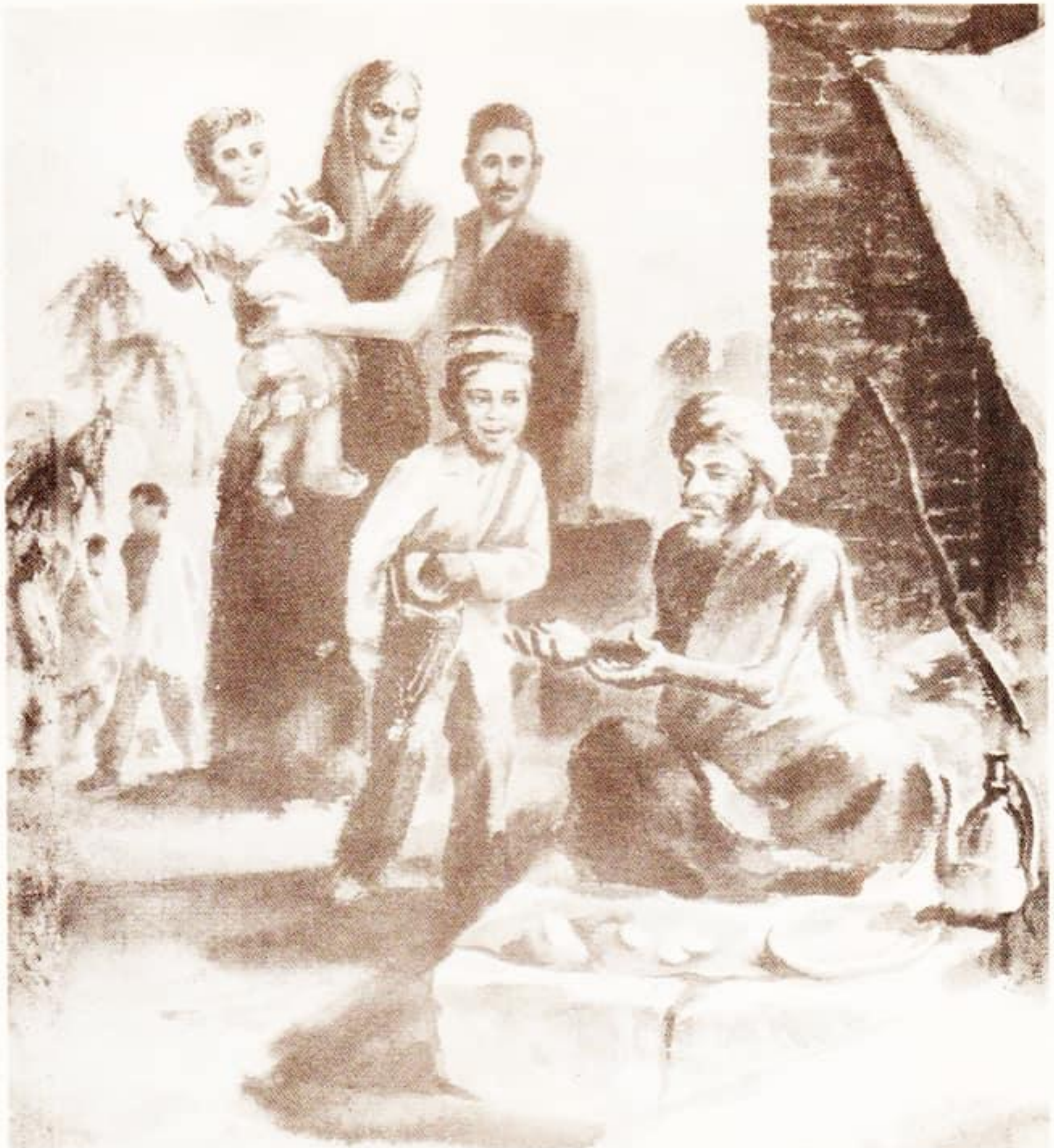
डॉल्फिन बुक्स द्वारा प्रकाशित 24 बैवानझुआंग रोड, बीजिंग, चीन

चाइना इंटरनेशनल बुक ट्रेडिंग कॉर्पोरेशन
(गुओजी) द्वारा वितरित शूडियन), PO Box 399, बीजिंग, चीन

पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना में मुद्रित



9 अक्टूबर 1910 की देर रात, महाराष्ट्र के एक छोटे से शहर सोलापुर में, एक नए जन्मे बच्चे की तेज़ चीख ने रात की शांति तोड़ दी, और इस तरह द्वारकानाथ शांताराम कोटनिस के दुनिया में आने की घोषणा की।



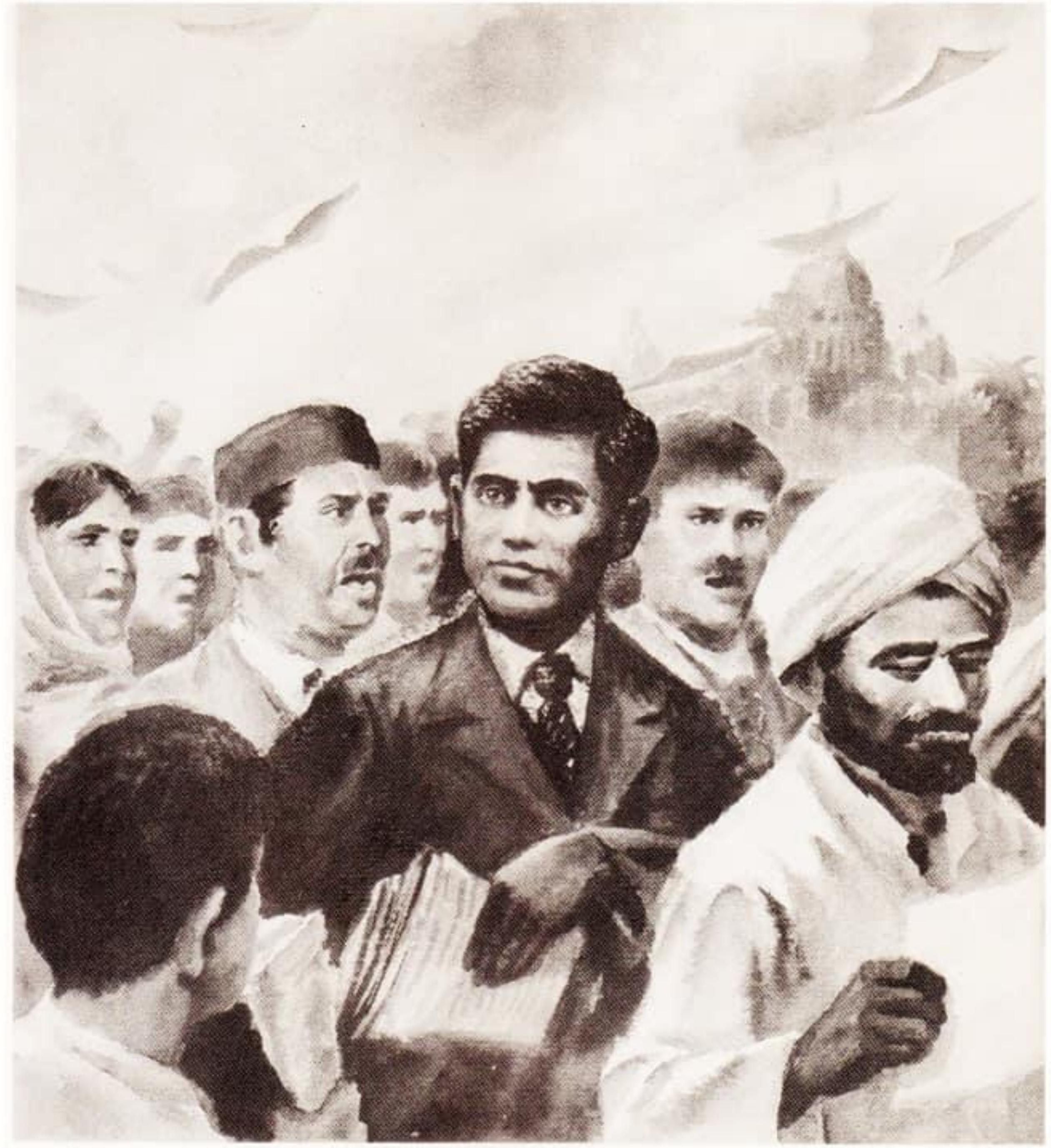
युवा कोटनिस एक अच्छे परिवार में पैदा हुए थे। उनके पिता, शांताराम कोटनिस, एक स्थानीय कॉटन मिल में सुपरवाइज़र थे, और उनकी माँ एक अच्छी गृहणी थीं। वे दोनों ही नेक दिल थे और उन्होंने अपने बेटे को गरीबों की मदद करना सिखाया।



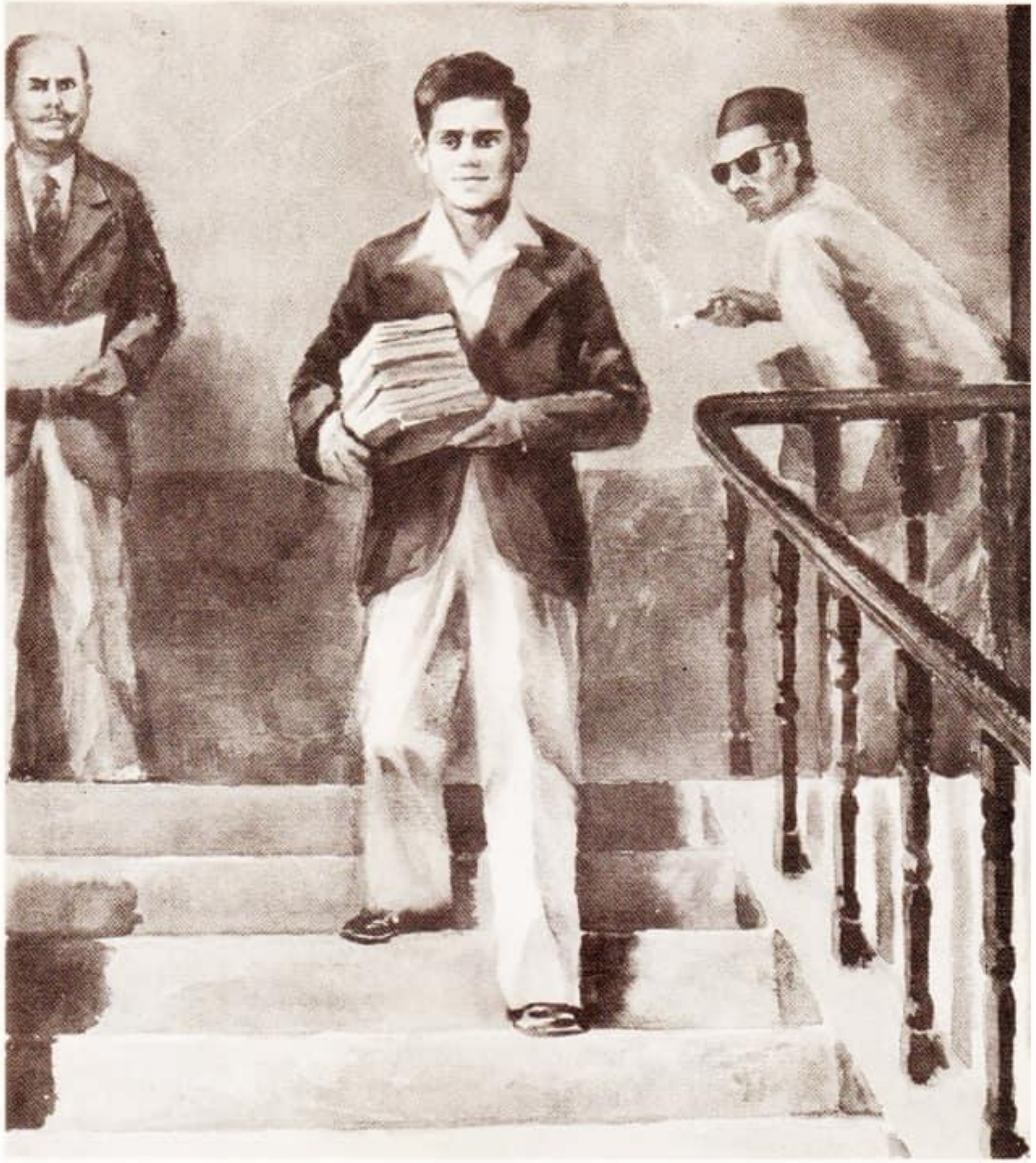
माता-पिता के असर ने, कोटनिस में दूसरों की मदद करने की अच्छी आदतें डालीं। एक गर्मी के दिन, कोटनिस और उसका चचेरा भाई बालकनी में बैठे थे, तभी चचेरा भाई अचानक पड़ोसी के घर की छत पर गिर गया। बिना किसी हिचकिचाहट के, कोटनिस कूदा, उसने अपने चचेरा भाई का हाथ पकड़ा और उसे छत से गिरने से बचाया।



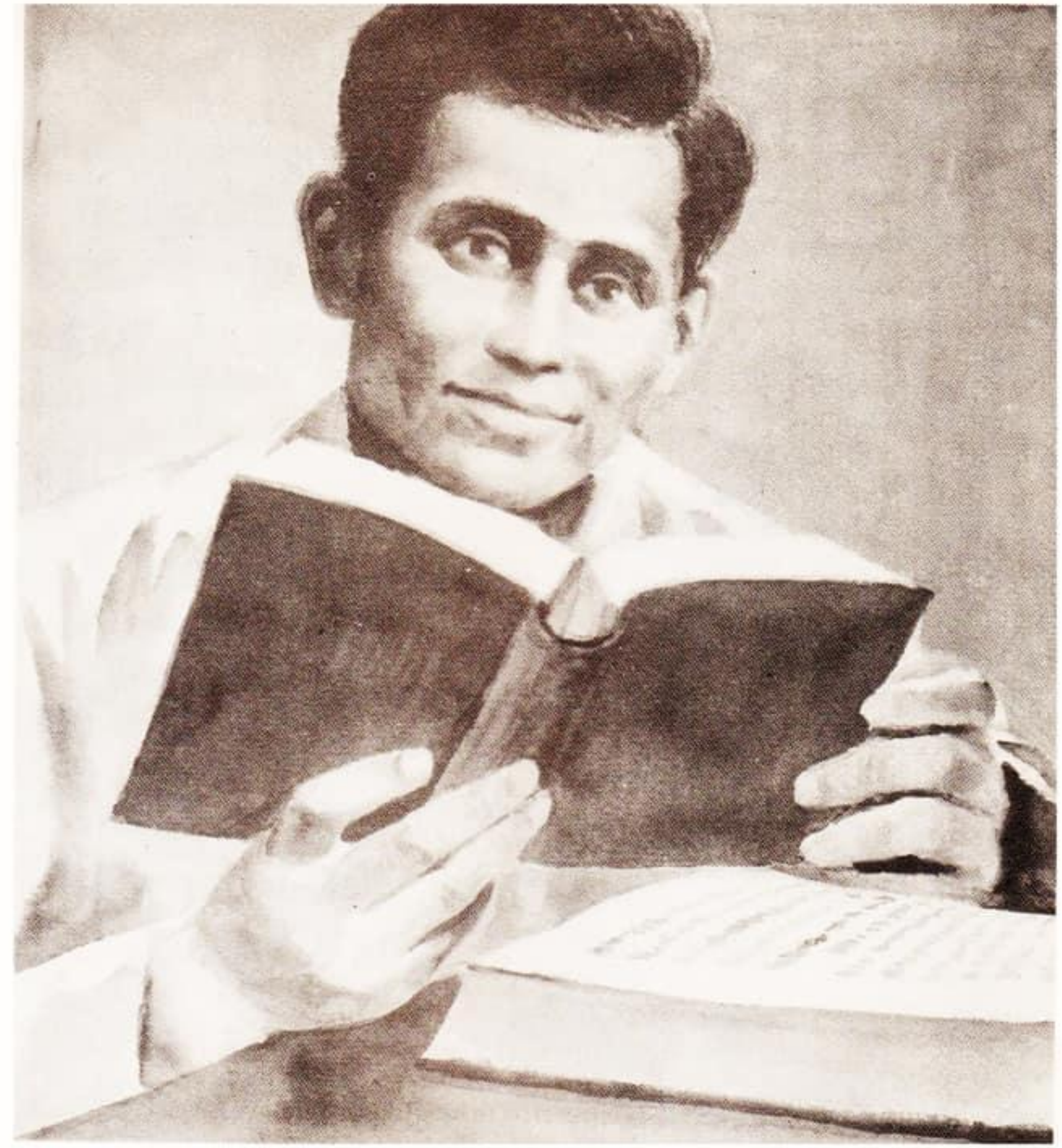
जब कोटनिस मिडिल स्कूल में थे, तब भारत अभी भी एक ब्रिटिश उपनिवेश था। कोटनिस ने महात्मा गांधी के शुरू किए गए असहयोग आंदोलन का समर्थन किया। वो अपने पिता के साथ एक रैली में गया जिसमें ब्रिटिश कपड़ों की होली जलाई गई। तब से, परिवार ने सिर्फ़ भारतीय हाथ से बुने हुए कपड़े पहने।



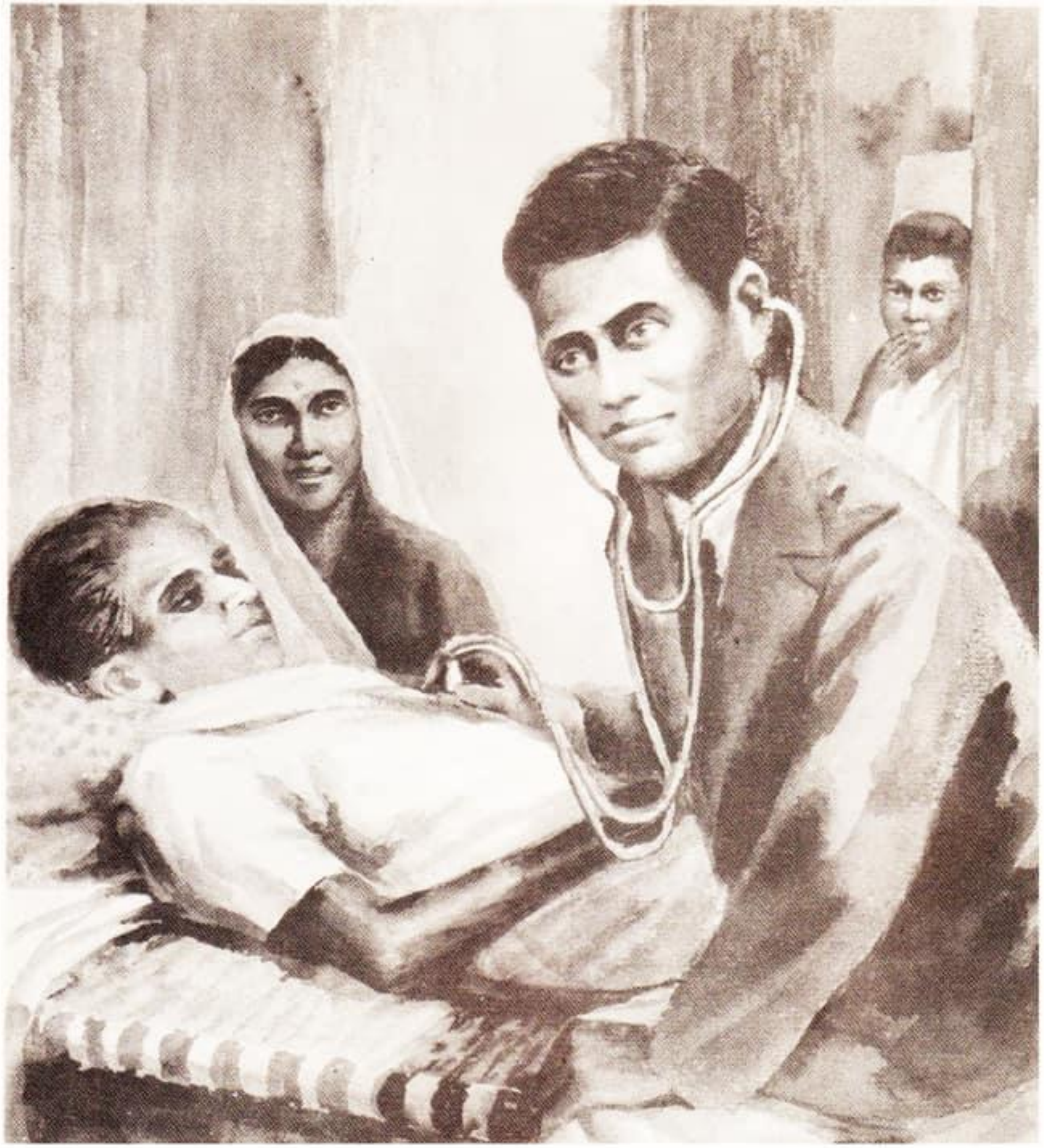
1932 में, जब वे कॉलेज में थे, तो उसके शहर में अंग्रेजों ने कुछ देशभक्तों को मार डाला। कोटनिस का दिल गुस्से से भर गया। अपने साथी छात्रों के साथ मिलकर उसने एक विरोध प्रदर्शन आयोजित किया।



जब कोटनिस ने अपने किए के लिए माफी मांगने से इनकार किया, तो उसे स्कूल छोड़ने का आदेश दिया गया।



इसके बाद उसे बॉम्बे के ग्रांट मेडिकल कॉलेज में एडमिशन मिला, जहाँ से उसने 1936 में ग्रेजुएशन किया। उसके माता-पिता उम्मीद कर रही थे कि अब वह शादी करके अपना घर बसा लेगा। लेकिन कोटनिस अपनी पढ़ाई जारी रखना चाहता था और एक सर्जन बनना चाहता था।



ग्रेजुएशन के बाद उसे वहीं रहने के लिए कहा गया और वे फिजियोलॉजी में असिस्टेंट बन गया, जिसे एक अच्छी नौकरी माना जाता था। लेकिन वे अपने काम से खुश नहीं था; उसे यह देखकर बड़ा झटका लगा कि गरीब लोग अपनी बीमारियों से परेशान रहते थे क्योंकि वे मेडिकल उपचार का खर्च नहीं उठा सकते थे। कोटनिस ने खुद से पूछा, "ऐसा क्यों?"



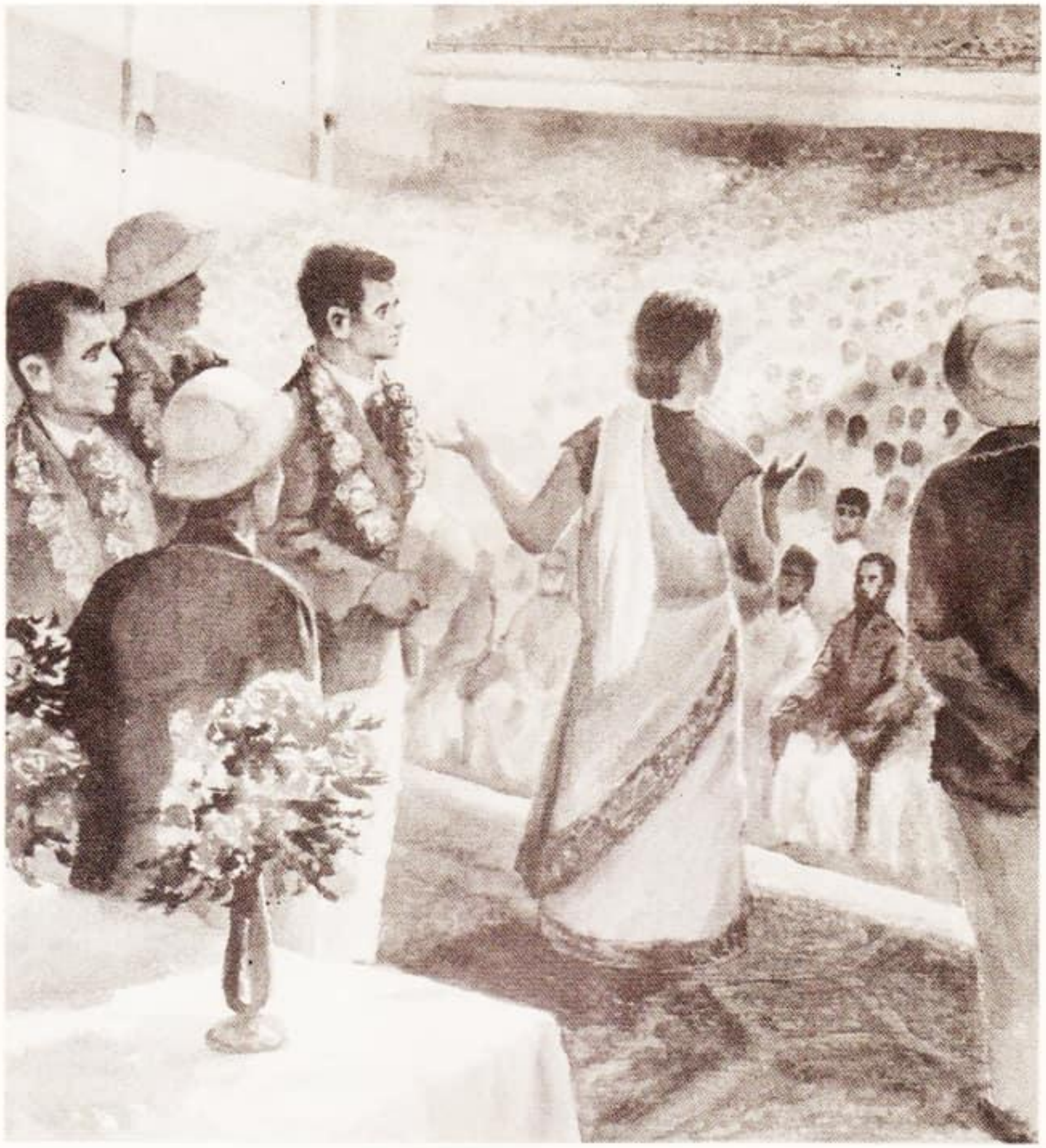
उस परीक्षा की तारीख पास थी जिसमें उसे उच्च डिग्री मिलनी थी। लेकिन ठीक उसी समय, इंडियन नेशनल कांग्रेस के चेयरमैन पंडित जवाहरलाल नेहरू ने चीनी लोगों के एंटी-जापानी युद्ध में मदद के लिए एक मेडिकल मिशन बनाने की घोषणा की। कोटनिस ने अपनी लंबे समय से इंतज़ार की जा रही परीक्षा छोड़ने का फैसला किया और “चाइना एड कमेटी” को अपनी अर्जी भेजी।



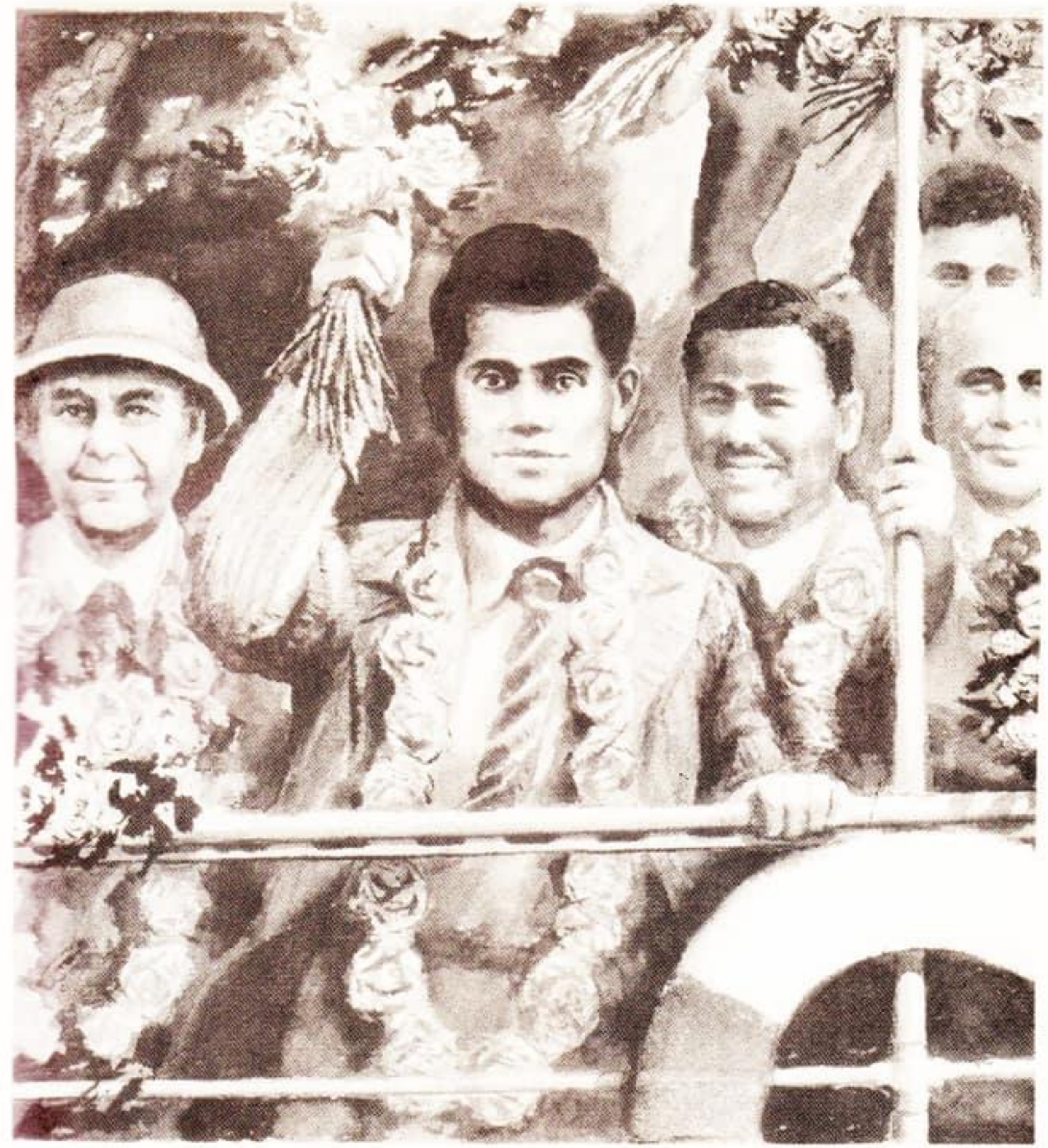


“चाइना एड कमिटी” के चेयरमैन ने उन्हें शांत मन से सोचने की सलाह दी, क्योंकि चीन जाने का मतलब था अपनी जान को जोखिम में डालना और उच्च शिक्षा छोड़ना। कोटनिस ने गंभीरता से जवाब दिया: "यह मेरा अपना चयन है," फिर उसके बाद उन्हें मिशन में शरीक कर लिया गया।

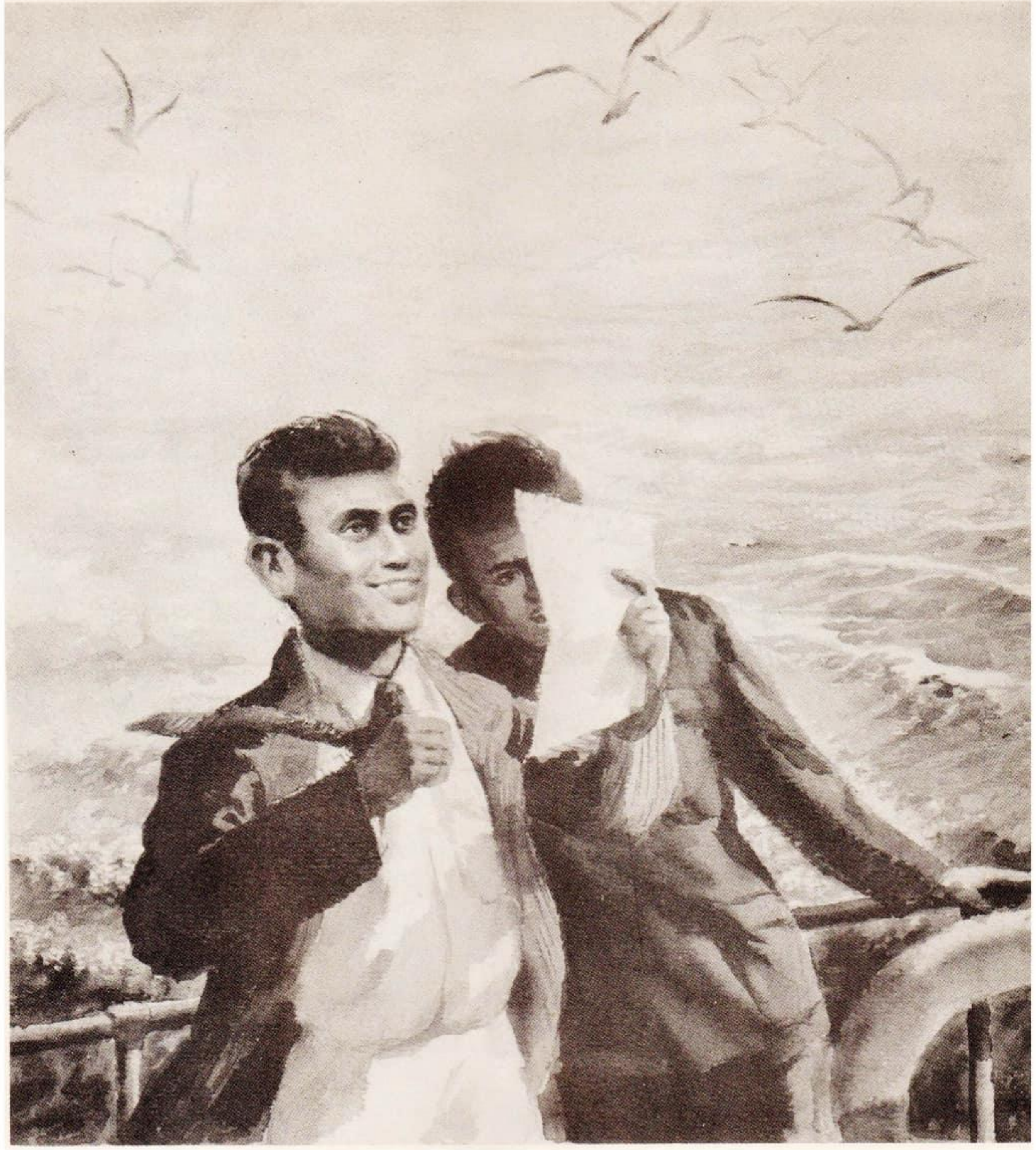
कोटनिस अलविदा कहने के लिए अपने शहर सोलापुर वापस लौटे। बहुत से लोग उनसे मिलने आए। उनके जाने पर, उनके पिता ने उन्हें हिम्मत दी: "पक्का इरादा रखो और आगे बढ़ो, और बीच में हार मत मानो!" और उनकी माँ ने उन्हें एक चांदी का गिलास दिया जिस पर लिखा था: “अपनी माँ को कभी मत भूलना।”



मेडिकल मिशन के सदस्यों को विदा करने के लिए बॉम्बे में एक बड़ी रैली हुई जिसमें, मज़दूरों, छात्रों और हर तरह के लोगों ने क्रांतिकारी गाने गाए और नारे लगाए: "भारतीय लोग और चीनी लोग भाई-भाई हैं!" इंडियन नेशनल कांग्रेस की लीडर मैडम सरोजिनी नायडू ने मेडिकल मिशन को लोगों का राजदूत कहा। वो सबकुछ सुन कोटनिस भावुक हुए।



1 सितंबर, 1938 की आधी रात को, मेडिकल मिशन P. & O. लाइनर SS राजपुताना पर सवार होकर बॉम्बे से निकला। मिशन में कुल पाँच लोग थे: मिशन के लीडर डॉ. एम. अटल; मिशन के डिप्टी लीडर डॉ. एम. चोलकर; डॉ. डी. मुखर्जी; डॉ. बी.के. बसु; और डॉ. डी. एस. कोटनिस।



जब स्टीमर समुद्र में था, तो कोटनिस ने एक कॉपी में चीनी-अंग्रेजी वोकैबुलरी के शब्द लिखे, और चीनी गीत "मार्च ऑफ़ द वॉलंटियर्स" गाना सीखा। इस प्रकार उन्हें "स्कॉलर" का उपनाम मिला।



भविष्य के काम की तैयारी के लिए, कोटनिस मिलिट्री एक्सरसाइज में अपने साथियों को लीड करने के लिए स्वतः आगे आए। यह बात उन्होंने स्कूल में सीखी थी। वह ड्रिल को गंभीरता से लेते थे और वो एक सख्त टीचर थे। इसलिए उनका दूसरा उपनाम, "कर्नल" था।



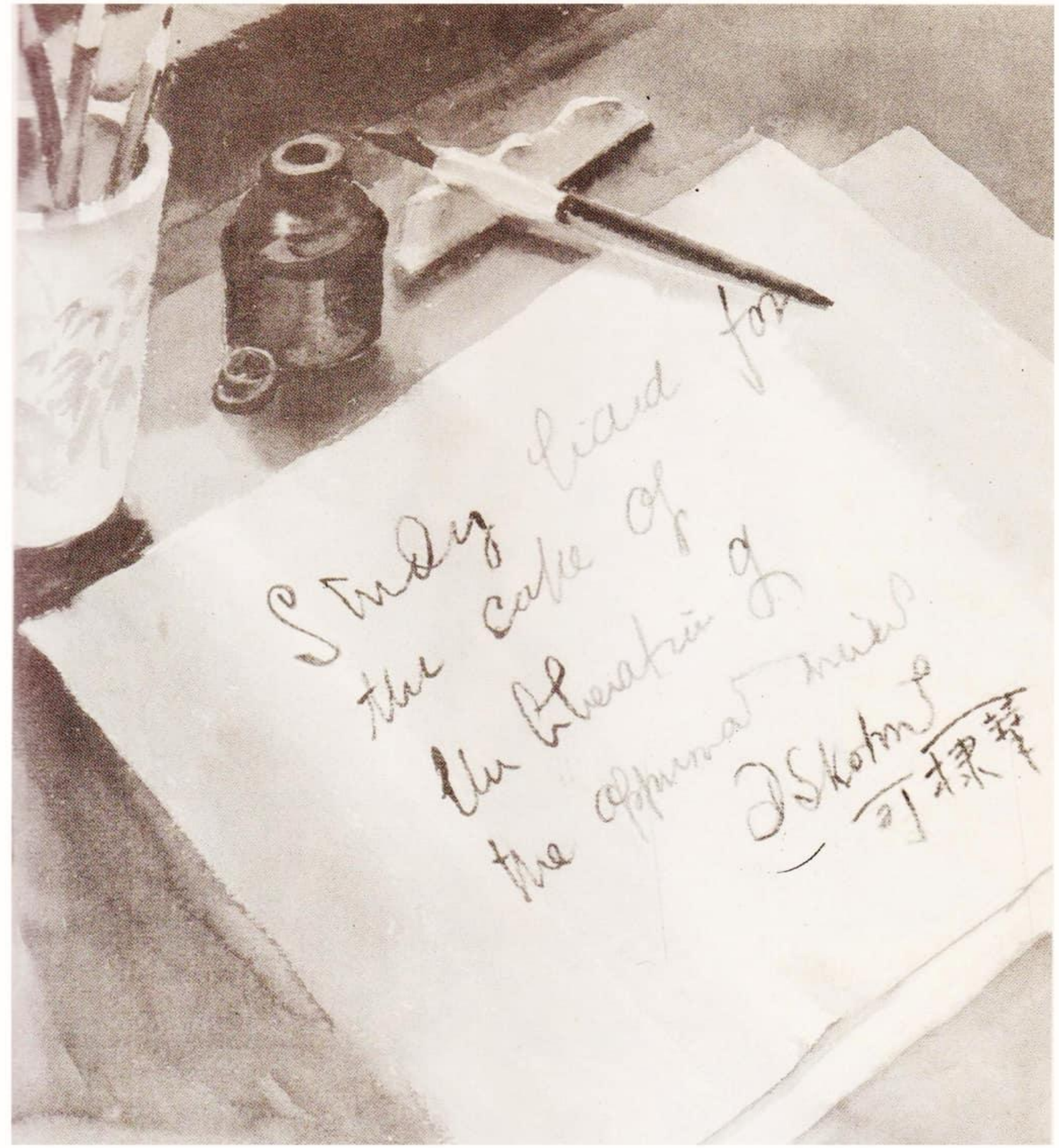
जब सत्रह दिन बाद उनका स्टीमर ग्वांगझू पहुंचा, तो मैडम सूंग चिंग लिंग उनसे मिलने आईं। डॉ. अटल ने मैडम सूंग से धीमी आवाज़ में कहा, "हम वुहान जाना चाहते हैं, क्योंकि झोउ एनलाई वहीं हैं, और वह हमें आठवीं रूट आर्मी में शामिल होने के लिए युद्ध के मैदान में भेज देंगे।" उनके पास खड़े कोटनिस मुस्कुराए।



7 अक्टूबर 1938 को, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की सेंट्रल कमेटी के मिलिट्री कमीशन के वाइस-चेयरमैन झोउ एनलाई ने भारत से आए “एड-चाइना मेडिकल मिशन” के सभी सदस्यों का स्वागत किया। कोटनिस को कॉमरेड झोउ एनलाई बहुत मिलनसार लगे। जब उन्हें पता चला कि कोटनिस सिर्फ़ अट्ठाईस साल के हैं, तो झोउ एनलाई ने मज़ाक में कहा, "तब आप चीनी और भारतीय लोगों के बीच, दोस्ताना लेन-देन के लिए और भी बहुत काम कर सकते हैं।"



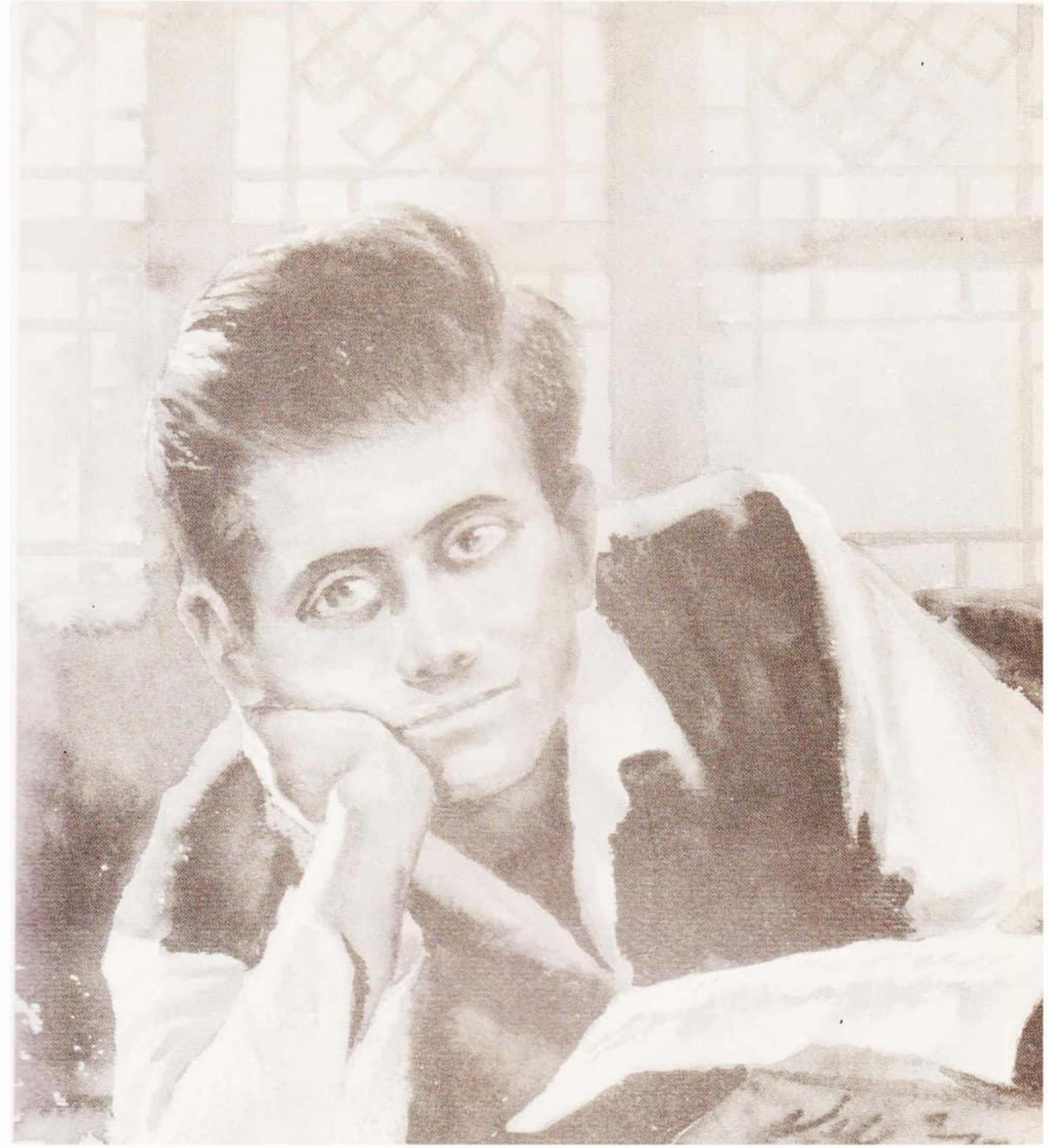
लेकिन झोउ एनलाई उन्हें तुरंत युद्ध के मैदान में भेजने के लिए राज़ी नहीं हुए; उन्होंने सुझाव दिया कि वे कुछ समय के लिए कुओमिन्तांग के कंट्रोल में चोंगकिंग में काम करें। यह सुझाव कोटनिस की उम्मीद से कहीं ज़्यादा था।



कुछ महीने बाद, झोउ एनलाई ने “इंडियन एड-चाइना मेडिकल मिशन” के सदस्यों को चोंगकिंग से यानान के लिए रवाना किया। जाने से पहले, उन सभी के नाम में “*हुआ*“ जोड़ा गया। चीन के लिए अपने प्यार को दर्शाने के लिए उन सभी लोगों ने अपने नाम के बाद "चीन" रखा। कोटनिस का चीनी नाम “दिहुआ” था ।



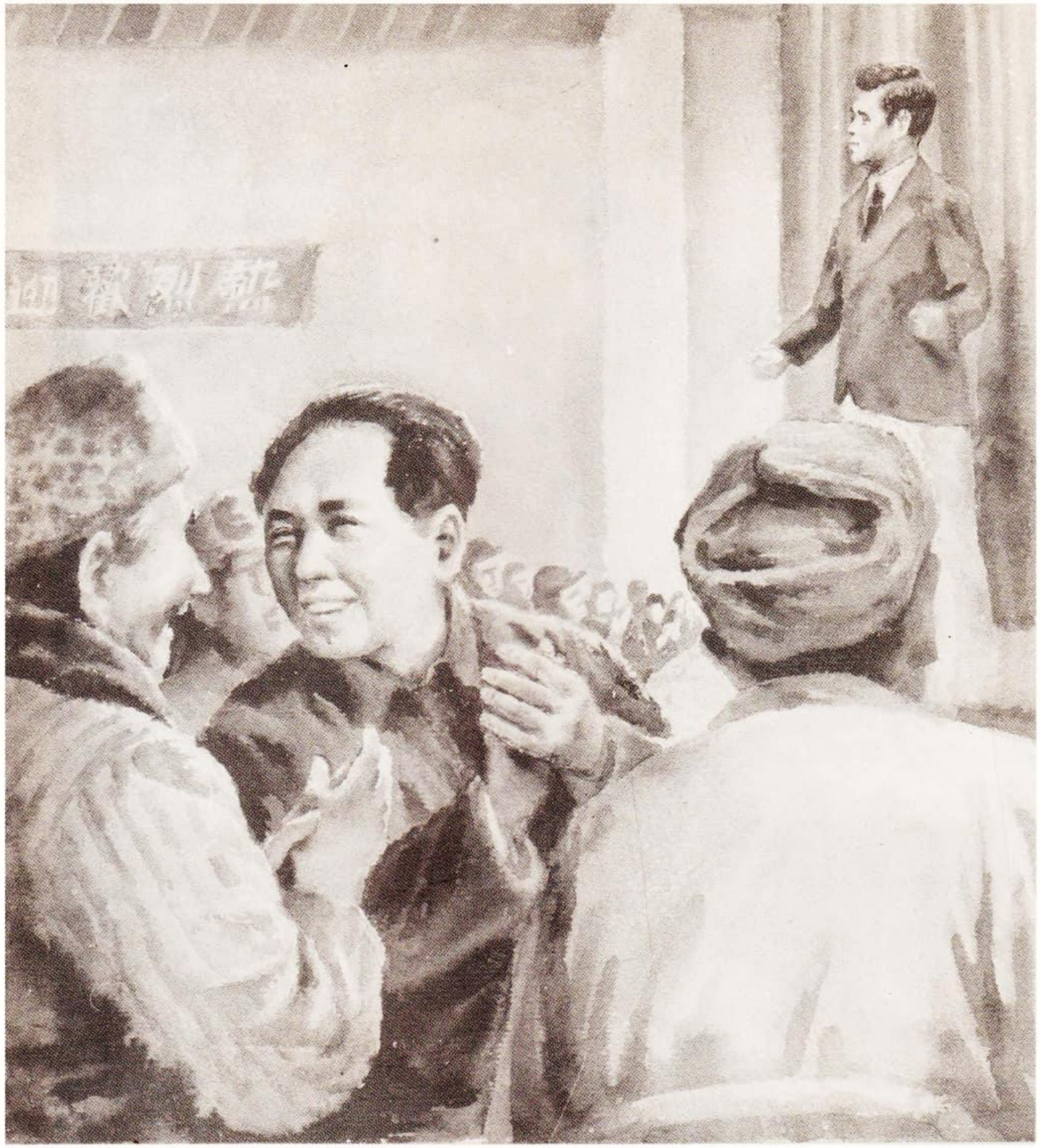
कोटनिस जाने के दिन का बेसब्री से इंतज़ार कर रहे थे। अपने पिता को लिखे खत में उन्होंने लिखा, "मुझे उम्मीद है कि उत्तरी चीन की इस ट्रिप पर मैं अपनी आँखों से आज की दुनिया में नई राजनैतिक ताकत – कम्युनिज़्म को देख पाऊँगा।"



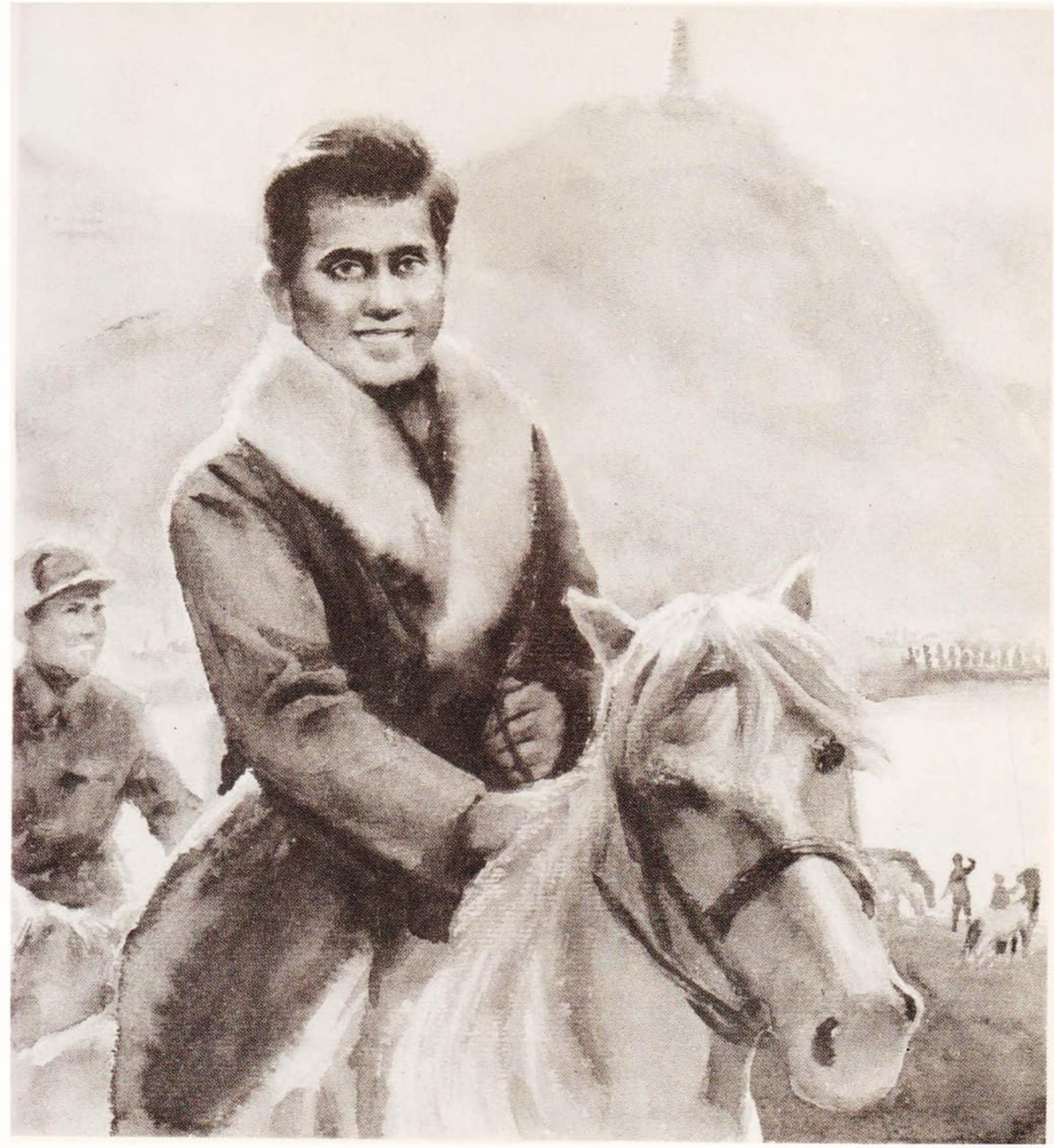
यानान के लिए निकलने से एक दिन पहले, कोटनिस को घर से एक चिट्ठी मिली, जिसमें उनके पिता की मौत की दुखद खबर थी। आँसुओं से भरकर, उन्होंने अपने साथियों की यह सलाह ठुकरा दी कि वे अपने पिता के अंतिम संस्कार में शामिल होने के लिए भारत वापस जाएँ। क्योंकि उन्हें अब भी अपने पिता की बातें याद थीं: "दृढ़ इच्छाशक्ति के साथ आगे बढ़ो, और बीच में हार मत मानो!"



फरवरी 1939 को, बर्फ़बारी और हवाई हमले के बावजूद, यानान के लोगों और सैनिकों ने भारत से आए इन दोस्त दूतों का, नाच-गाने के साथ गर्मजोशी से स्वागत किया।



यानान पहुँचने के तीसरे दिन, आठवीं रूट आर्मी के जनरल हेल्थ डिपार्टमेंट ने एक बड़ी स्वागत मीटिंग रखी। कोटनिस ने स्टेज पर जाकर चीनी भाषा में "मार्च ऑफ़ द वॉलंटियर्स" गाना गाया। उन्होंने बहुत भावना और ताकत के साथ गीत गाया, जैसे वे बहुत जल्द दुश्मन से लड़ने के लिए मोर्चे पर जा रहे हों। चेयरमैन माओ ज़ेडॉन्ग भी वहाँ मौजूद थे, जो तालियाँ बजाने से खुद को रोक नहीं पाए।



कुछ समय बाद, चोलकर और मुखर्जी को अपनी सेहत की वजह से भारत वापस जाना पड़ा। कोटनिस, यानान के क्रांतिकारी माहौल से बहुत उत्साहित थे। उन्हें अटल और बसु के साथ, उत्तरी चीन के मोर्चे पर जाने के लिए कहा गया।



दुश्मन की बढ़ती नाकाबंदी के कारण, कोटनिस और उनके साथियों को यानान से 15 किलोमीटर दूर, आठवें रूट के आर्मी हॉस्पिटल में काम करना पड़ा। कोटनिस ने सर्जन और रेडियोलॉजिस्ट के तौर पर भी काम किया।



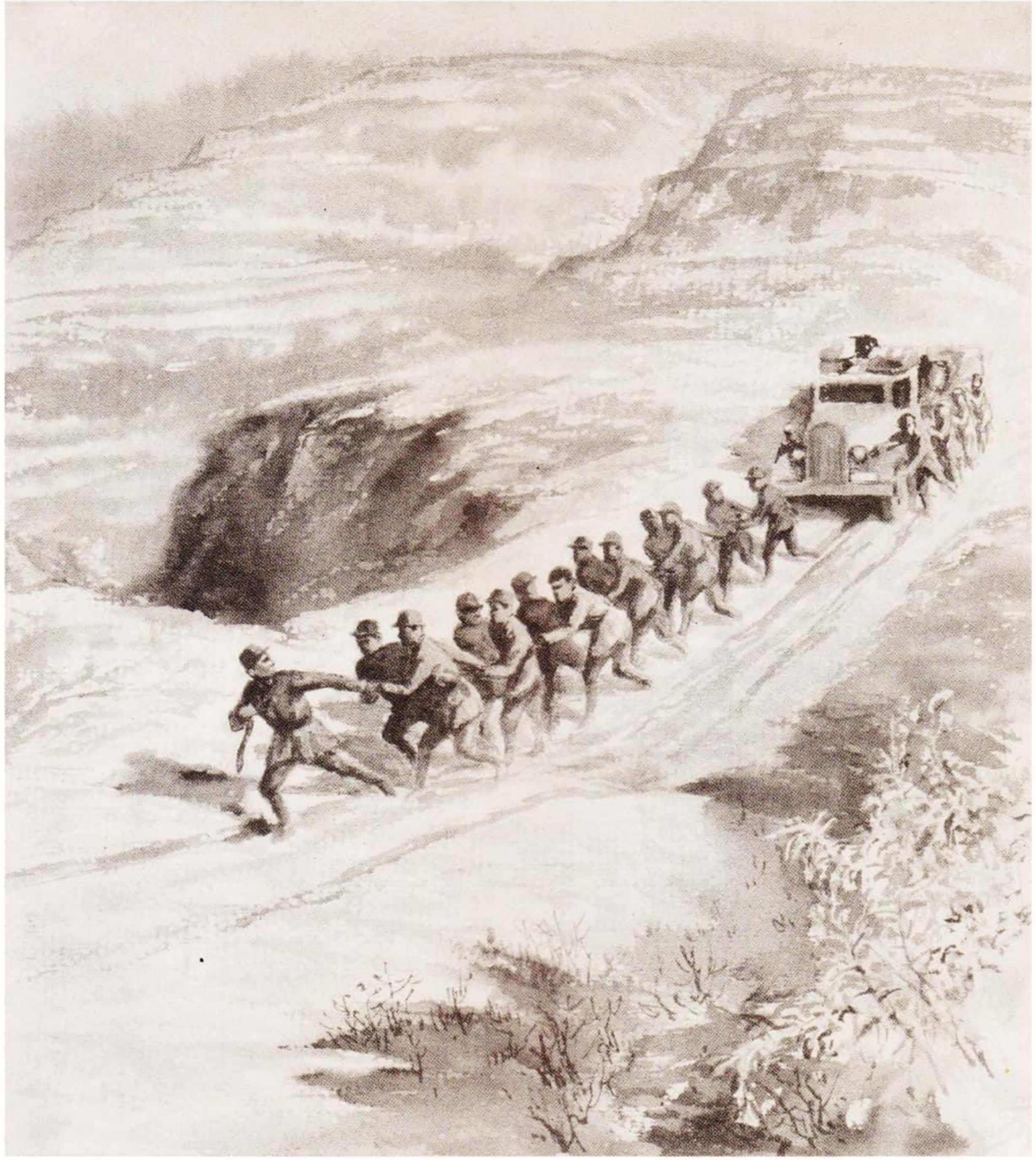
जुलाई की एक बारिश वाली रात, अटल, कोटनिस और बसु को एक इमरजेंसी संदेश मिला कि झोउ एनलाई का दाहिना हाथ टूट गया है और उन तीनों को तुरंत यानान जाना चाहिए। अंधेरे और फिसलन भरी सड़कों के बावजूद, वे घोड़ों पर सवार होकर जितनी तेज़ी से हो सके, निकल पड़े।



कुछ समय के इलाज के बाद, झोउ एनलाई का हाथ ठीक हो रहा था। एक दिन, भारतीय डॉक्टर यह देखकर हैरान रह गए कि झोउ एनलाई अपने बाएं हाथ से लिख रहे थे। उन्होंने पूछा, "आप ऐसा कैसे कर सकते हैं?" झोउ एनलाई ने जवाब दिया: "मैं सिर्फ अपना काम कर रहा हूँ।" कोटनिस को यह बात बहुत अच्छी लगी।



1939 की सर्दियों की शुरुआत में, आठवीं रूट आर्मी के कमांडर-इन-चीफ झू डे ने इंडियन डॉक्टरों को टेलीग्राफ करके मोर्चे पर बुलाया। उनके जाने से पहले, चेयरमैन माओ ने कोटनिस से लंबी बात की, और उन्हें अच्छा काम करने, अच्छी पढ़ाई करने और अच्छी सेहत की दुआ दी। चेयरमैन माओ ने उन्हें अपने हाथ का बना खाना भी खिलाया।



मोर्चे तक का सफ़र बहुत मुश्किल था। 23 नवंबर को उनका ओवरलोड ट्रक खराब हो गया। कोटनिस ने मज़ाक में कहा, "हमने ट्रक को नाराज़ किया है, इसलिए अब हमें उसकी कीमत चुकानी ही होगी!" उन्होंने रस्सी से ट्रक को खींचना शुरू कर दिया।



रास्ता और मुश्किल होता गया। अब उन्हें पैदल चलना पड़ा, कुछ लोग घोड़ों पर सवार थे। उन्होंने बर्फ़ और हवा में अपना रास्ता बनाया और कुछ गोलियों का भी सामना किया। हालाँकि यह पहली बार था जब उन्होंने लड़ाई देखी, लेकिन फिर भी वे डरे नहीं।



दो महीने बाद, एक लंबी और मुश्किल यात्रा के बाद, वे अपनी मंज़िल पर पहुँचे। कमांडर-इन-चीफ़ ज़ू डे ने आठवीं रूट आर्मी के हेडक्वार्टर में उनका स्वागत किया। उनके थके हुए चेहरों को देखकर, ज़ू डे ने उनमें से हर एक से हाथ मिलाया।



12 नवंबर, 1939 को, “अमेरिका और कनाडा की एड-चाइना मेडिकल टीम” के लीडर डॉ. नॉर्मन बेथ्यून की लड़ाई के मैदान में बीमारी से मौत हो गई। डॉ. कोटनिस, उस मेमोरियल मीटिंग में शामिल हुए। डॉ. बेथ्यून की तस्वीर के सामने खड़े होकर कोटनिस ने कहा, "आपने मेरे लिए एक अच्छा उदाहरण पेश किया है।"



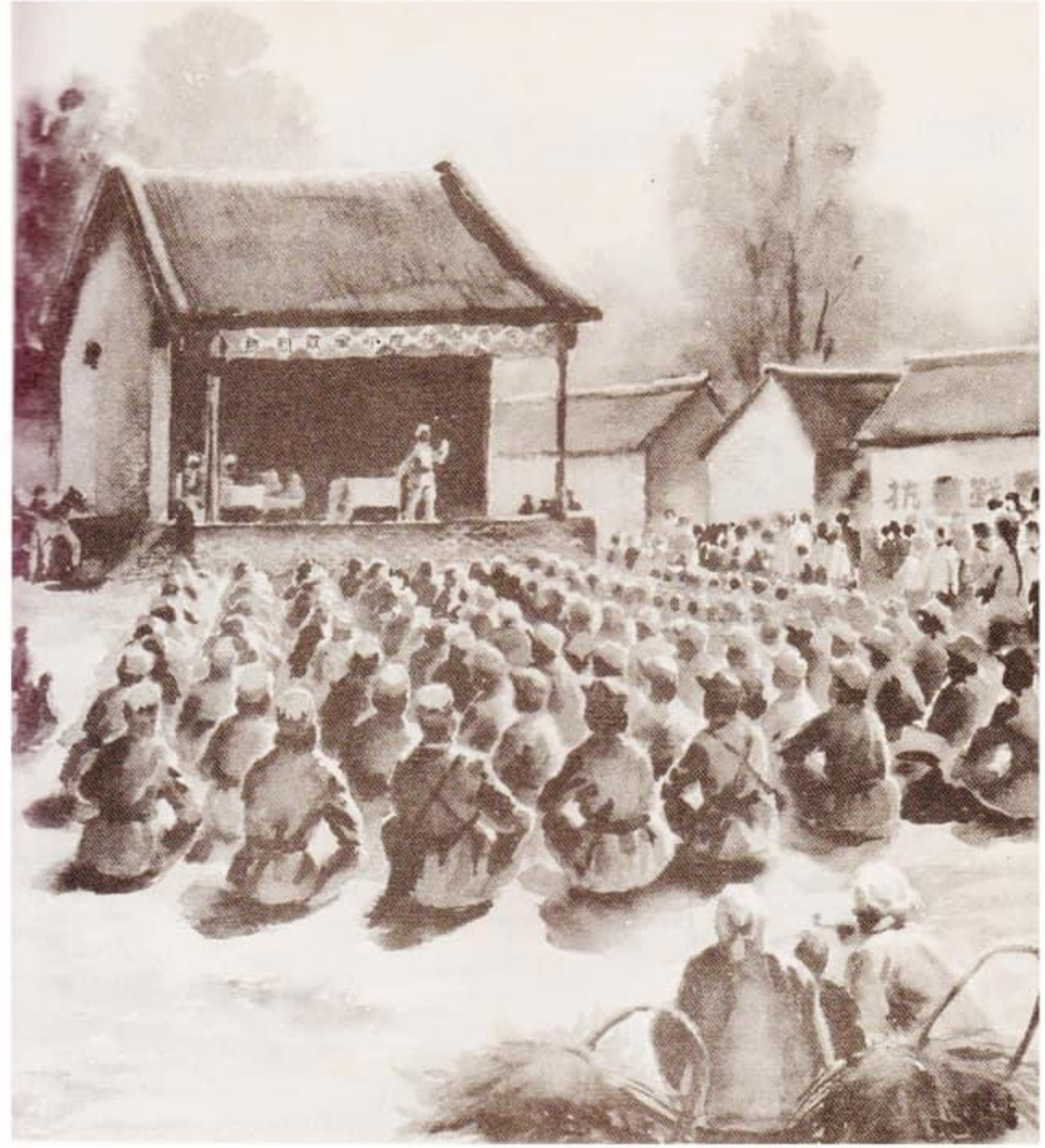
1940 की शुरुआत में, अटल बीमार हो गए और भारत लौट गए। इंडियन मेडिकल मिशन के शुरुआती पांच सदस्यों में से अब सिर्फ़ डॉ. कोटनिस और डॉ. बसु ही चीन में बचे। उन्हें शांक्सी-कहार-हेबेई बॉर्डर रीजन के मेडिकल स्कूल में भेजा गया, जहाँ कभी डॉ. नॉर्मन बेथ्यून काम करते थे।



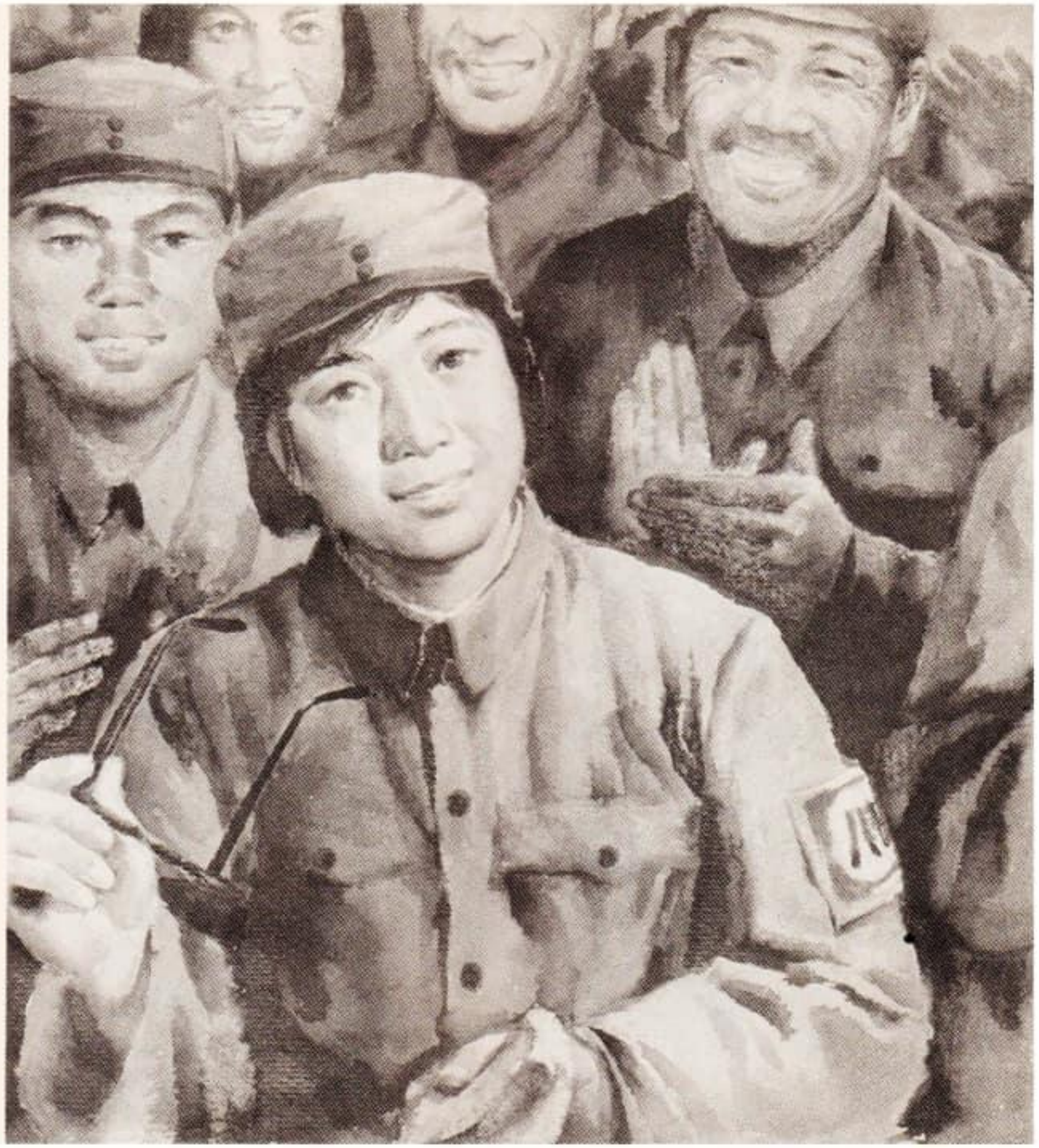
स्कूल जाते समय, वे भयंकर झांगडियन लड़ाई में फंस गए। लड़ाई के मैदान के पास एक टेम्परारी ऑपरेटिंग रूम बनाया गया था। उन्होंने गोलियों की बौछार में 46 घंटे काम किया और सौ से ज़्यादा घायल सैनिकों को बचाया।



देझोऊ के बीच दुश्मन के ट्रांसपोर्टेशन को रोकने के लिए, उन्होंने रात में कुल्हाड़ी और अपने नंगे हाथों से, रेलवे ट्रैक को नष्ट करने में स्थानीय लोगों की मदद की।



17 अगस्त को, कोटनिस और बसु उस गाँव में पहुँचे जहाँ बेथ्यून मेडिकल स्कूल और बेथ्यून इंटरनेशनल पीस हॉस्पिटल थे। उनके स्वागत के लिए हुई मीटिंग में, कोटनिस ने चीनी भाषा में भाषण दिया, जिसमें उन्होंने कहा, "मैं डॉ. बेथ्यून की तरह, दुनिया के लोगों की तरफ़ से, खुद को, एंटी-फ़ासिज़्म के काम में लगा दूँगा।"



उनके भाषण पर दर्शकों ने ज़ोरदार तालियाँ बजाईं। गुओ किंगलान नाम की एक लड़की कोटनिस की निस्वार्थता और ईमानदारी से इतनी प्रभावित हुई कि वह रो पड़ी।



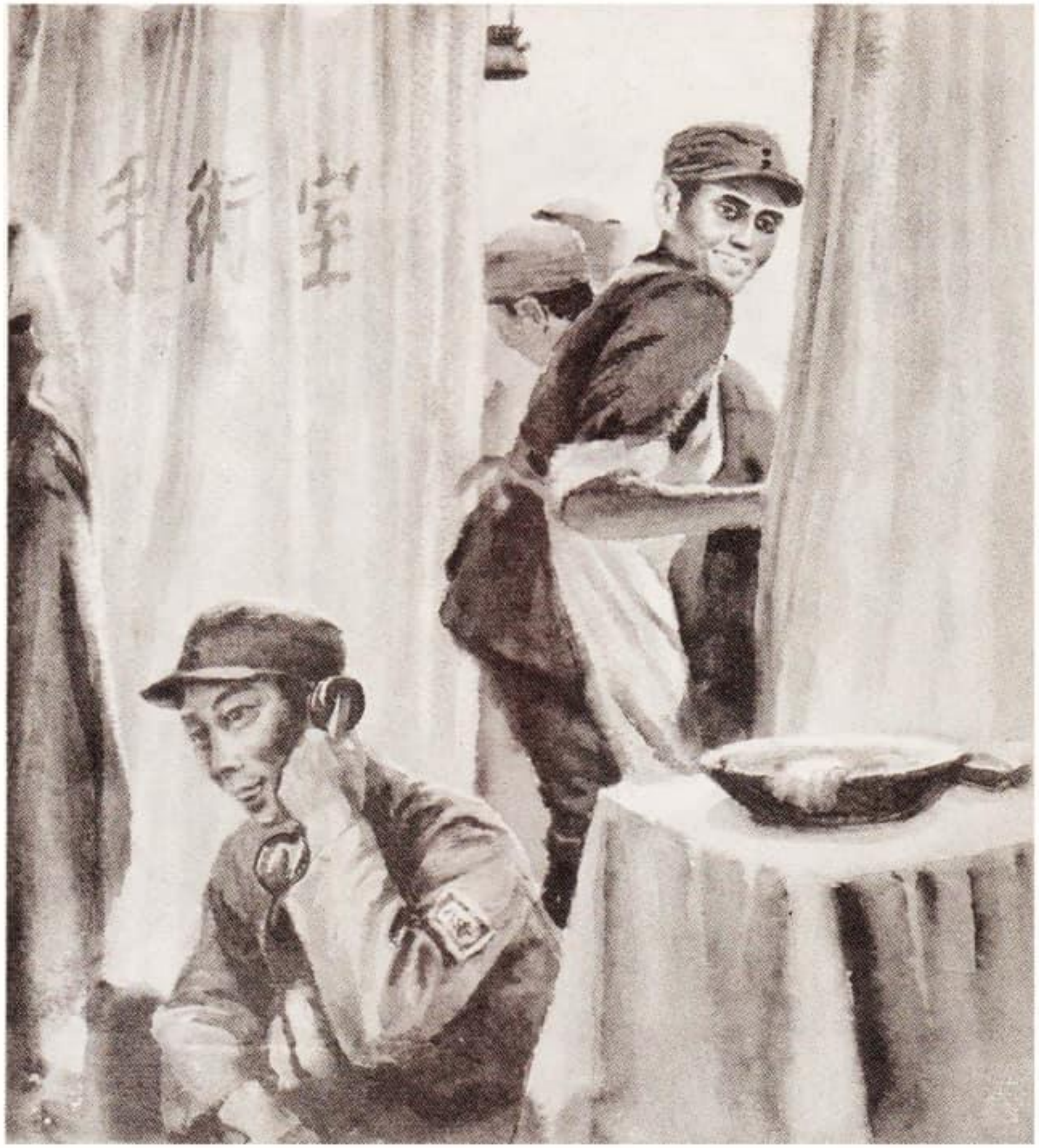
सितंबर में "हंड्रेड रेजिमेंट बैटल" शुरू होने के बाद, कोटनिस और बसु, दोनों ने एक-एक मेडिकल टीम को लीड किया और अलग-अलग जंग के मैदानों में गए। जाने से पहले उन्होंने एक-दूसरे से गुडलक कहा।



कोटनिस ने फायरिंग लाइन के ठीक पीछे एक सर्जिकल स्टेशन बनाया। बारूद के धुएं के बीच, उन्होंने लगातार तेरह दिनों तक काम किया और 585 घायल सैनिकों का ऑपरेशन किया।



वह तीन दिन से सोए नहीं थे, इसलिए जब आखिरी मरीज़ को ले जाया गया, तो वह ऑपरेशन टेबल पर ही सिर रखकर सो गए।



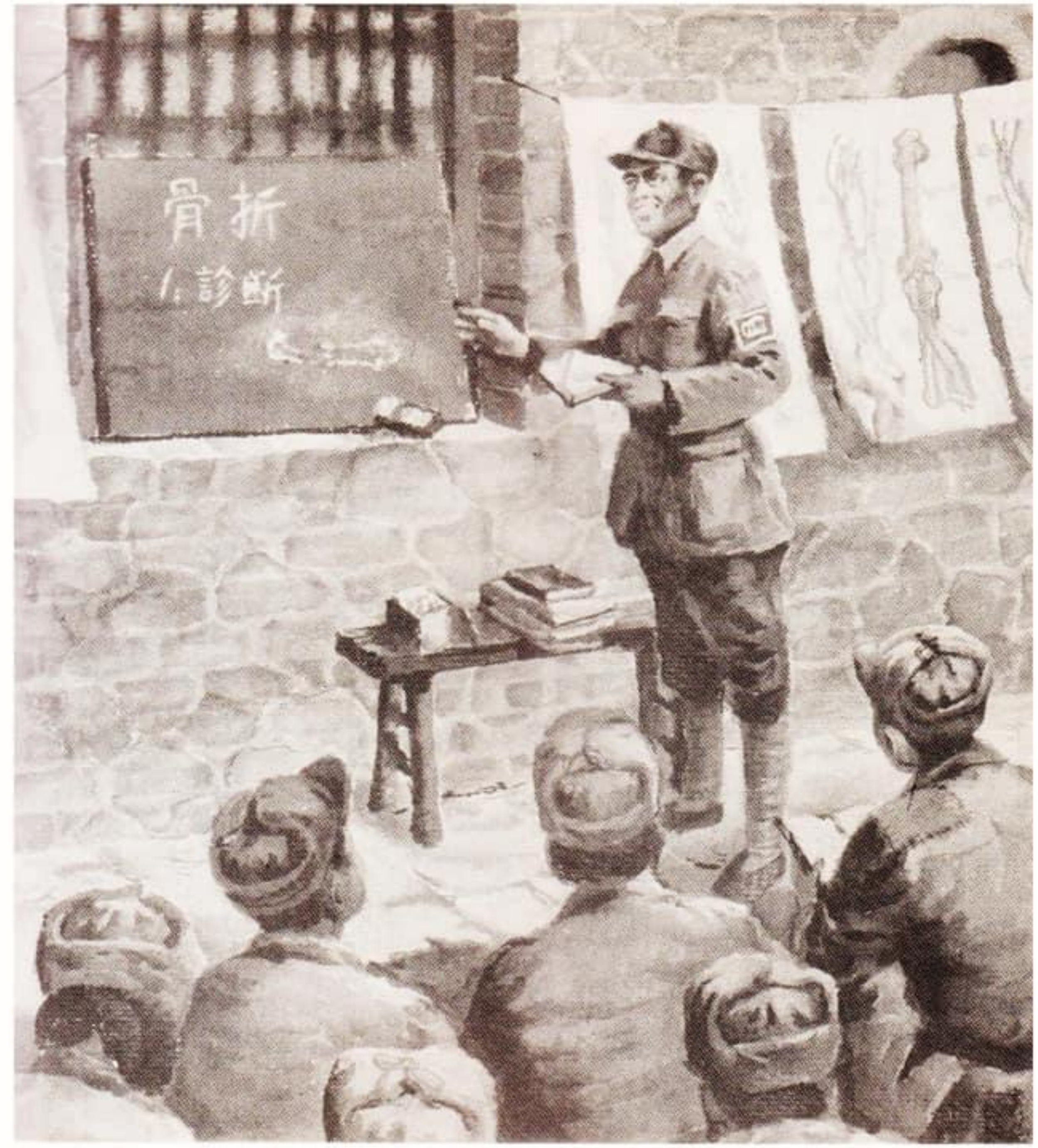
जियांग यिझेन ने उन्हें प्यार से लेकिन गंभीरता से अपनी सेहत पर ध्यान देने की सलाह दी। बिना कोई वजह बताए कोटनिस चुपचाप कमरे से बाहर चले गए, जबकि जियांग यिझेन फोन पर बात कर रहे थे।



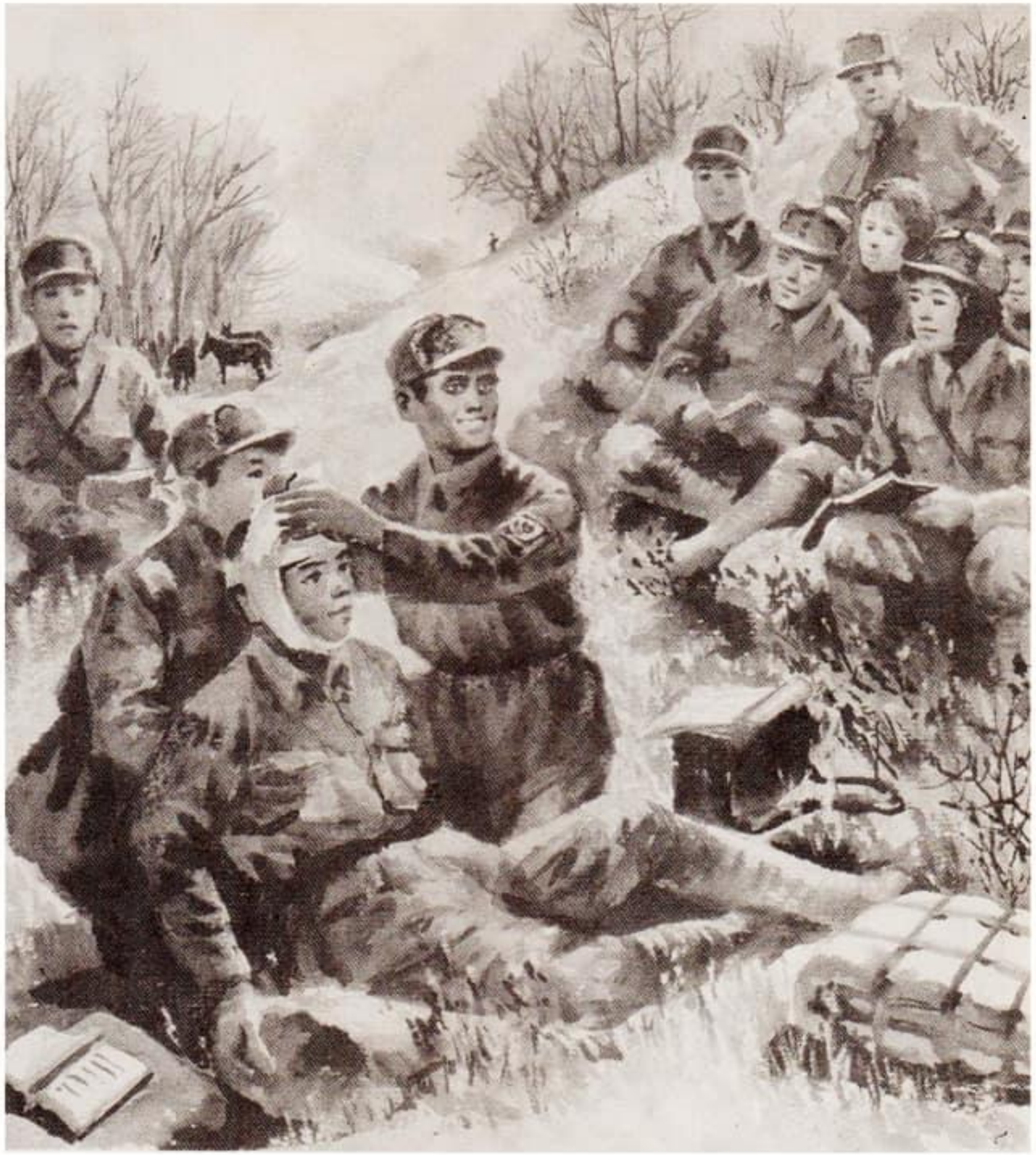
कोटनिस और बसु के लड़ाई के मैदान से लौटने के कुछ दिनों बाद, उन्हें भारत से एक केबल मिला, जिसमें उनसे तुरंत अपने देश वापस जाने के लिए कहा गया था। कोटनिस ने ज़ोर दिया कि वह भारत वापस न जाएँ क्योंकि चीन के लोगों को उसकी ज़रूरत थी। बसु खुद कोटनिस के फ़ैसले के बारे में रिपोर्ट देने के लिए यानान लौटकर आए।



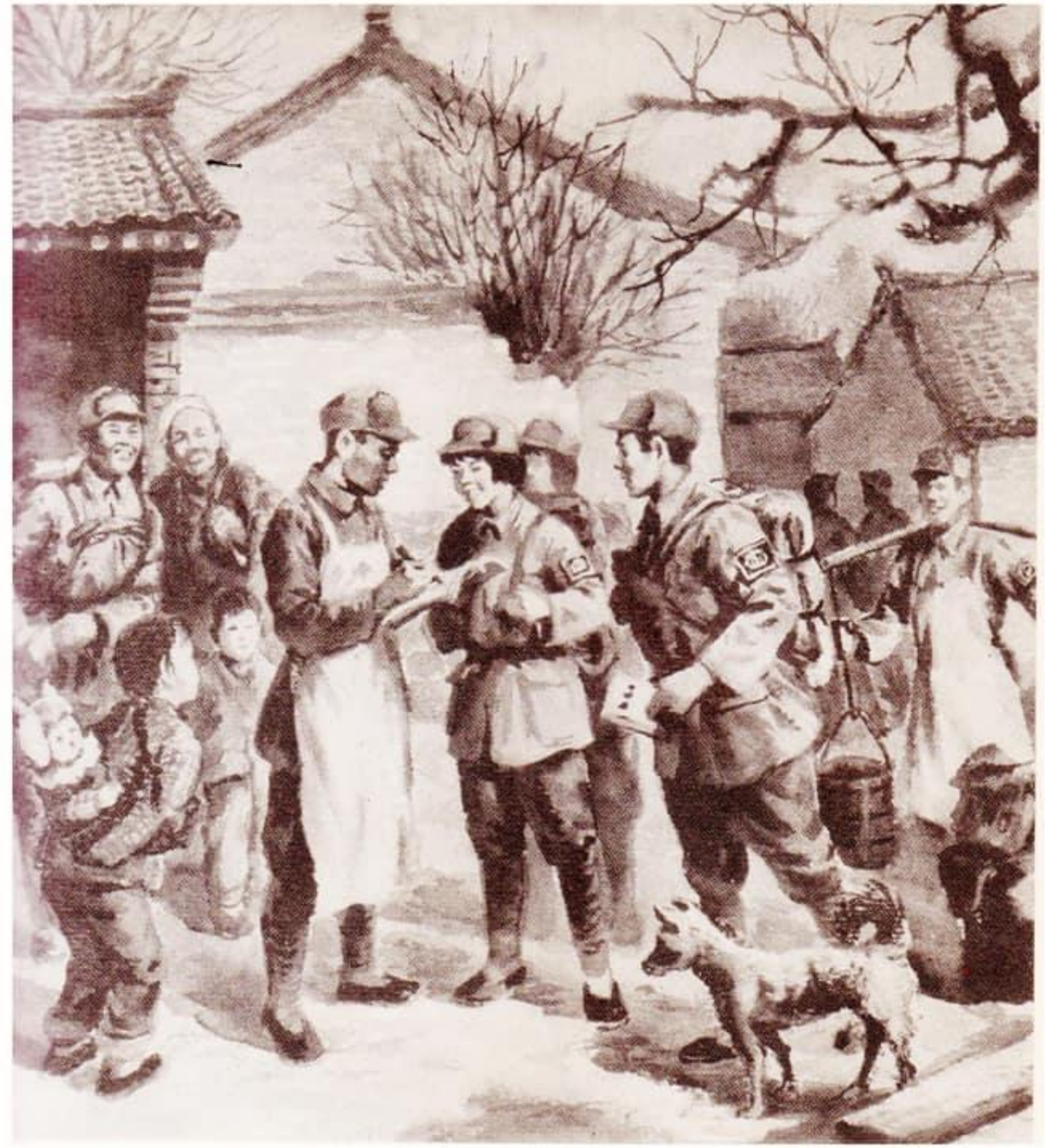
कोटनिस को सर्जरी का इंस्ट्रक्टर बनाया गया। गुओ किंगलान, जो इंग्लिश बहुत अच्छी जानते थे, ने उन्हें चीनी सीखने में मदद की। कोटनिस ने बहुत मेहनत से पढ़ाई की और जल्द ही वो चीनी में अपनी क्लास ले पाए। उसी समय उन्हें गुओ किंगलान से प्यार हो गया और वे उससे अलग होना बर्दाश्त नहीं कर सके।



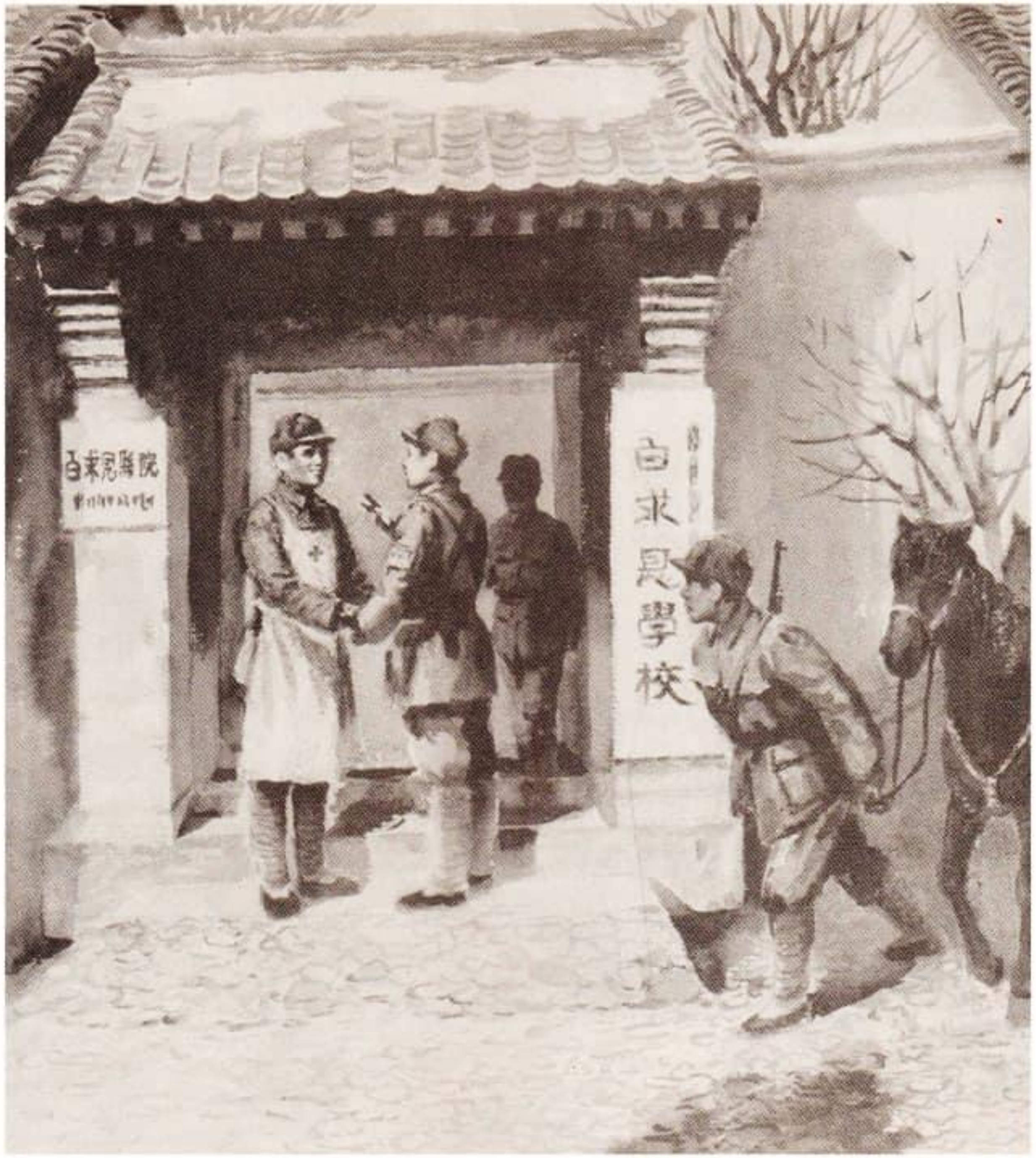
स्कूल में पढ़ाने की सुविधाओं की कमी थी। सर्दियों में भी अक्सर क्लास आंगन में ही लगती थीं। हालांकि कोटनिस को ठंडे मौसम की आदत नहीं थी, फिर भी वह हमेशा स्टूडेंट्स से बाहर बैठने को ही कहते थे।



लड़ाई के बीच के समय में वे क्लास लेते थे, या जानवरों पर एक्सपेरिमेंट करते थे। टीचर और स्टूडेंट इस तरह की टीचिंग को "आर्म्ड इंस्ट्रक्शन" कहते थे। कोटनिस ने हालात के हिसाब से खुद को ढालने की पूरी कोशिश की, और उन्होंने पूरी लगन से पढ़ाया।



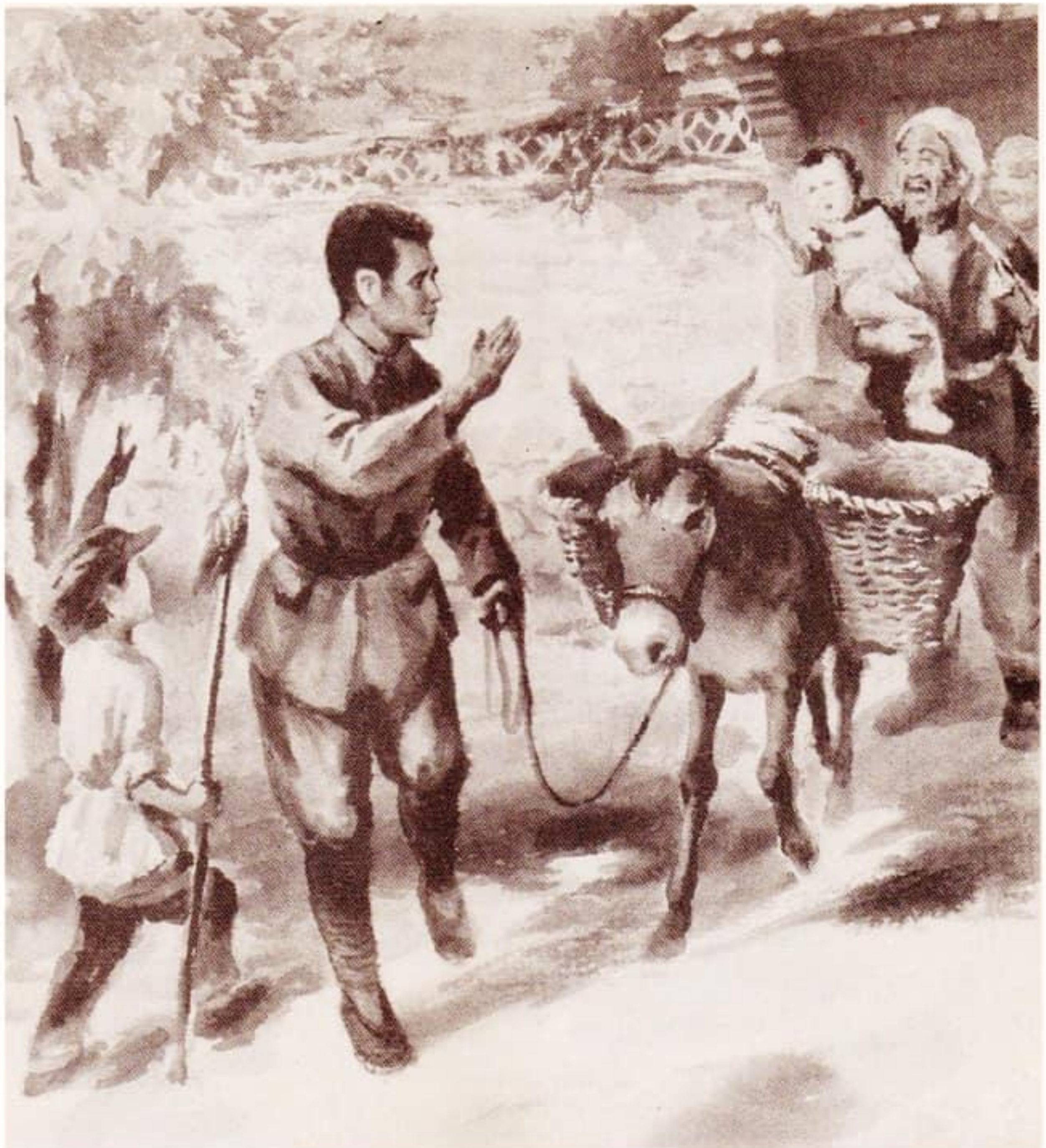
1941 में, ग्रेजुएट होने वाले स्टूडेंट्स का एक ग्रुप जाने से पहले, कोटनिस द्वारा लिखा हुआ एक लेख चाहता था। इसलिए उन्होंने चीनी भाषा में "एंटी-जापानी वॉर मस्ट विन" और इंग्लिश में "स्टडीइंग हार्ड फॉर द लिबरेशन ऑफ ऑल एक्सप्लॉइटेड पीपल इन द वर्ल्ड" लेख लिखा।



जब रेड आर्मी का "एंटी-मॉपिंग-अप" ऑपरेशन खत्म हुआ, तो शांक्सी-कहाई-हेबेई मिलिट्री रीजन के कमांडर नी रोंगझेन ने कोटनिस को नॉर्मन बेथ्यून इंटरनेशनल पीस हॉस्पिटल का पहला डायरेक्टर नियुक्त किया। यह उनकी उम्मीद से कहीं ज़्यादा था। उन्हें चिंता थी कि क्या वह इस काम के लिए काबिल थे। लेकिन जियांग यिझेन ने गंभीरता से कहा: "कमांडर नी ने मुझे आपको यह बताने के लिए कहा है कि एक दिन आप दूसरे बेथ्यून बनेंगे।"



कोटनिस जानते थे कि कमांडर और सैनिकों की भी यही उम्मीद थी, लेकिन यही उनका मकसद भी था। एक अच्छा डायरेक्टर बनने के लिए, उन्होंने अपने साथियों और मरीज़ों की हर तरह की राय को सुना।



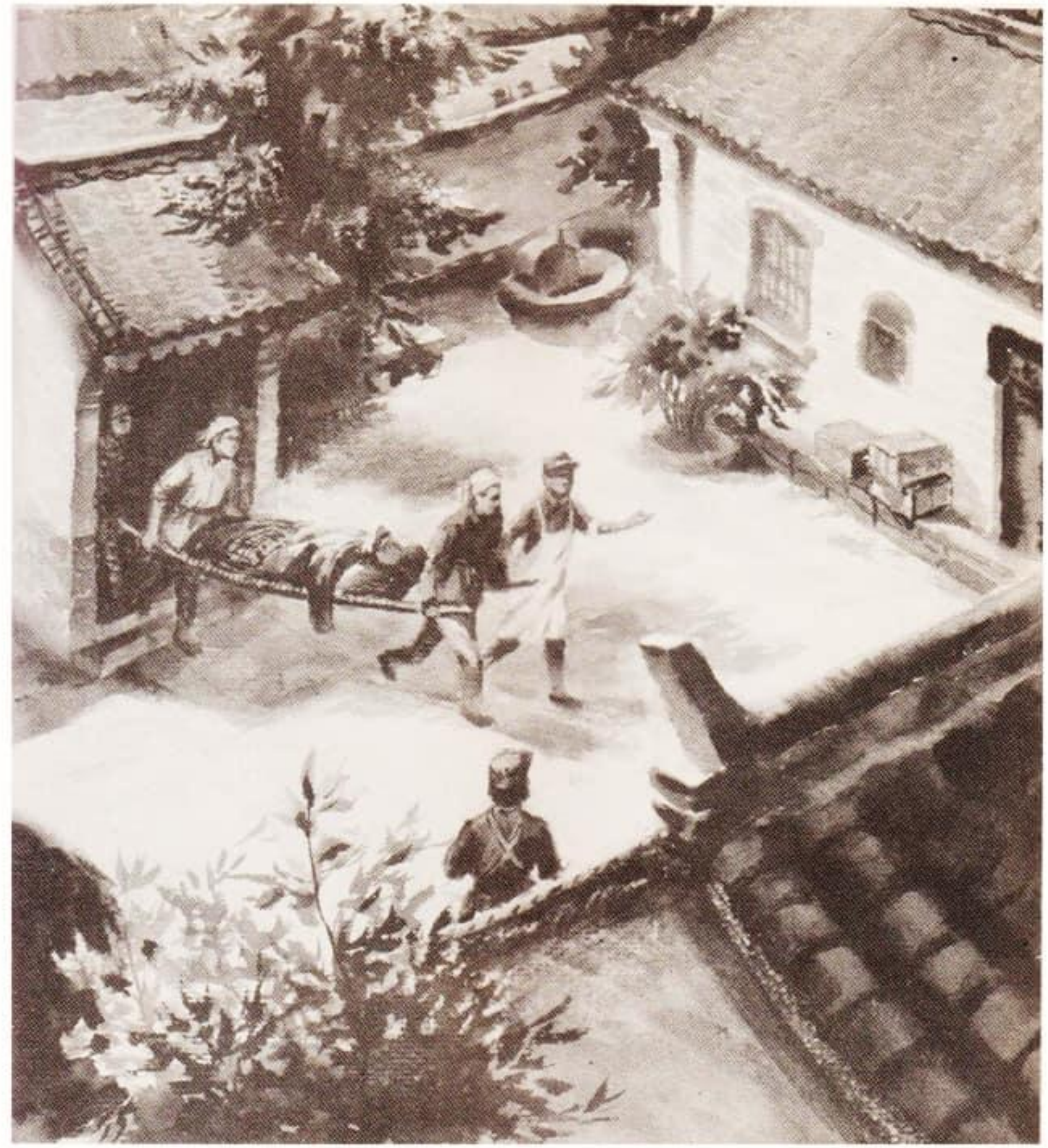
उन्होंने लोकल लोगों को स्ट्रेचर ले जाने, राशन और चारा लाने-ले जाने और हॉस्पिटल के आस-पास दूसरे काम करने के लिए इकट्ठा किया। जब लोगों ने कोटनिस को एंटी-जापानी युद्ध के लिए पूरे दिल से काम करते देखा, तो वे भी उन कामों को खुशी-खुशी वह करने लगे जो उन्हें दिए गए।



लोकल लोगों की मदद और प्रैक्टिस से मिले अनुभव की वजह से, कोटनिस ने मेडिकल ट्रीटमेंट में बहुत सुधार किया। बहुत सारे घायल सैनिक ठीक हो गए। मोर्चे पर जाने से पहले, कोटनिस हमेशा कहते थे, "गुड लक टू यू!"



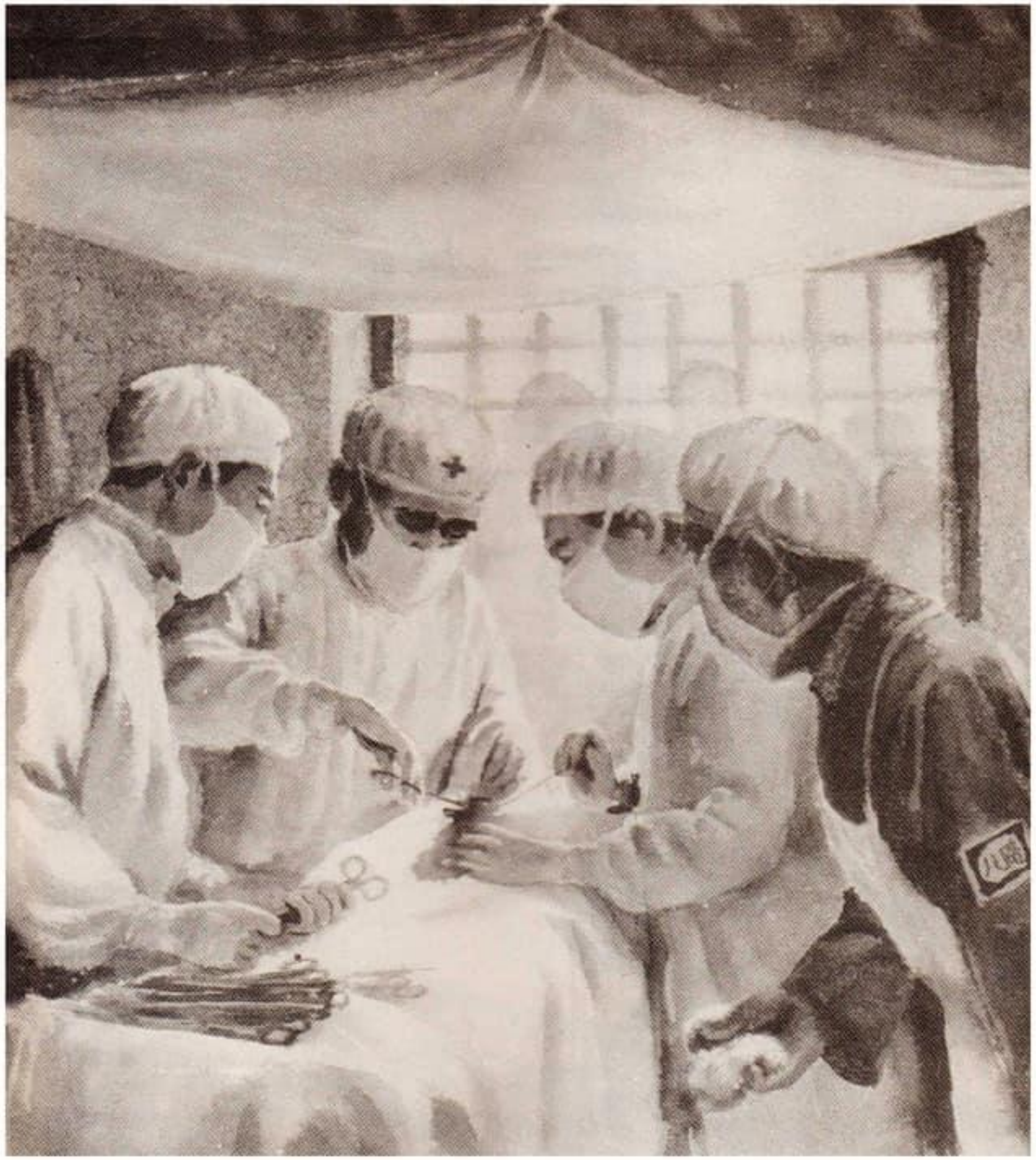
नर्सेस डे पर, कोटनिस ने अखबार में "मॉडल नर्स — नाइटिंगेल" नाम से एक आर्टिकल लिखा। आर्टिकल में उन्होंने लिखा कि आठवीं रूट आर्मी की नर्सों और मेडिकल वर्कर्स को फ्लोरेंस नाइटिंगेल के उदाहरण से सीखना चाहिए। उन्होंने खुद भी नाइटिंगेल से बहुत सीखा।



एक दिन, एक बहुत ज़्यादा घायल सैनिक को हॉस्पिटल भेजा गया, जिसे पेट की बड़ी सर्जरी की ज़रूरत थी। हॉस्पिटल के डॉक्टर और नर्स बहुत परेशान थे, क्योंकि उनके पास इतने मुश्किल ऑपरेशन के लिए ज़रूरी सामान या अनुभव नहीं था।



कोटनिस भी बहुत परेशान थे। उन्होंने पुराने डॉक्टरों से सलाह ली, ऑपरेशन का प्लान बनाया और उसी रात ऑपरेशन के लिए कुछ आसान उपकरण डिज़ाइन किए। उन्हें तब पता चला कि सुबह हो गई थी, जब उनका बॉडीगार्ड उनके लिए नाश्ता लेकर आया।



ऑपरेशन शुरू हुआ, कोटनिस चीफ सर्जन थे। ऑपरेशन रूम के अंदर और बाहर लोग घबराहट में नतीजे का इंतज़ार कर रहे थे, लेकिन कोटनिस के हाथ शांत और भरोसे से भरे हुए थे।



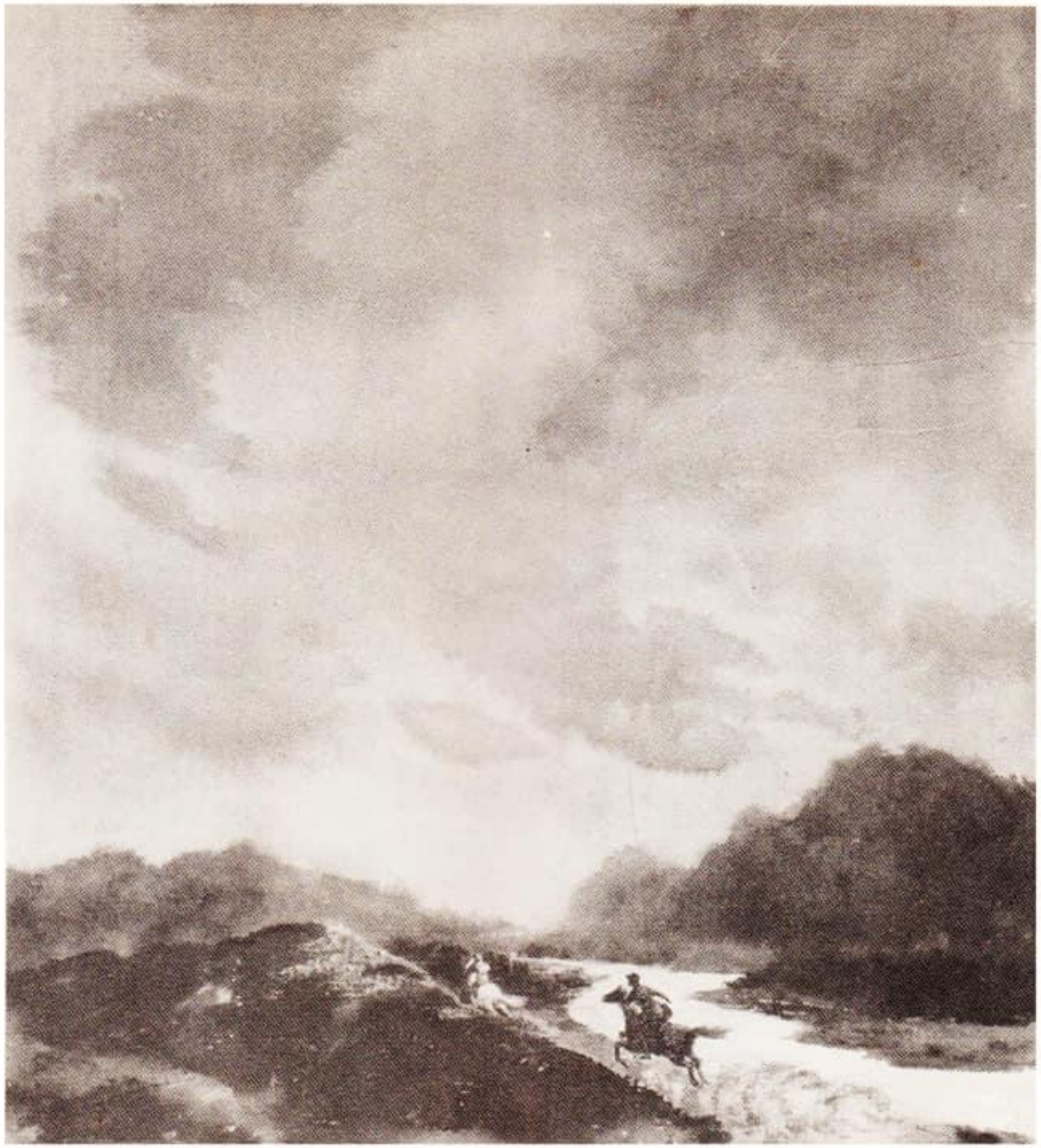
ऑपरेशन सफल रहा। बाद में, उन्होंने कई मुश्किल ऑपरेशन किए। कमांडर-इन-चीफ नी रोंगझेन ने उनकी बहुत तारीफ़ की।



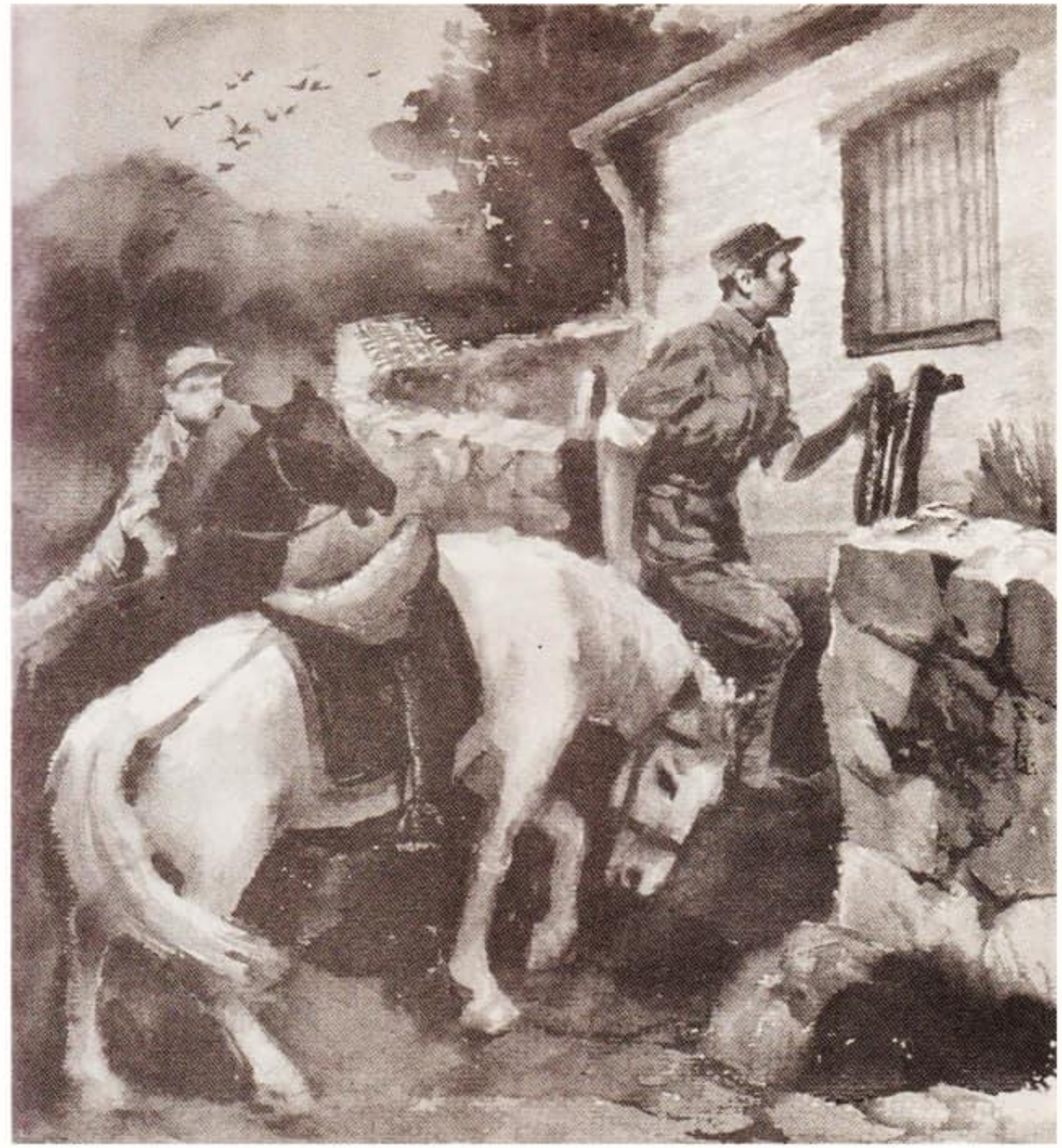
जब फसल का मौसम पास आया, उस समय कोटनिस और गुओ किंगलान के बीच प्यार भी फल-फूल रहा था। पतझड़ के आखिर में एक ठंडे दिन, जब कोटनिस आग जला रहे थे, तब गुओ हाथ में ऊनी स्वेटर लेकर उनके घर आई। उसने स्वेटर बिस्तर पर रख दिया और कहा, "मैंने यह स्वेटर तुम्हारे लिए बुना है।"



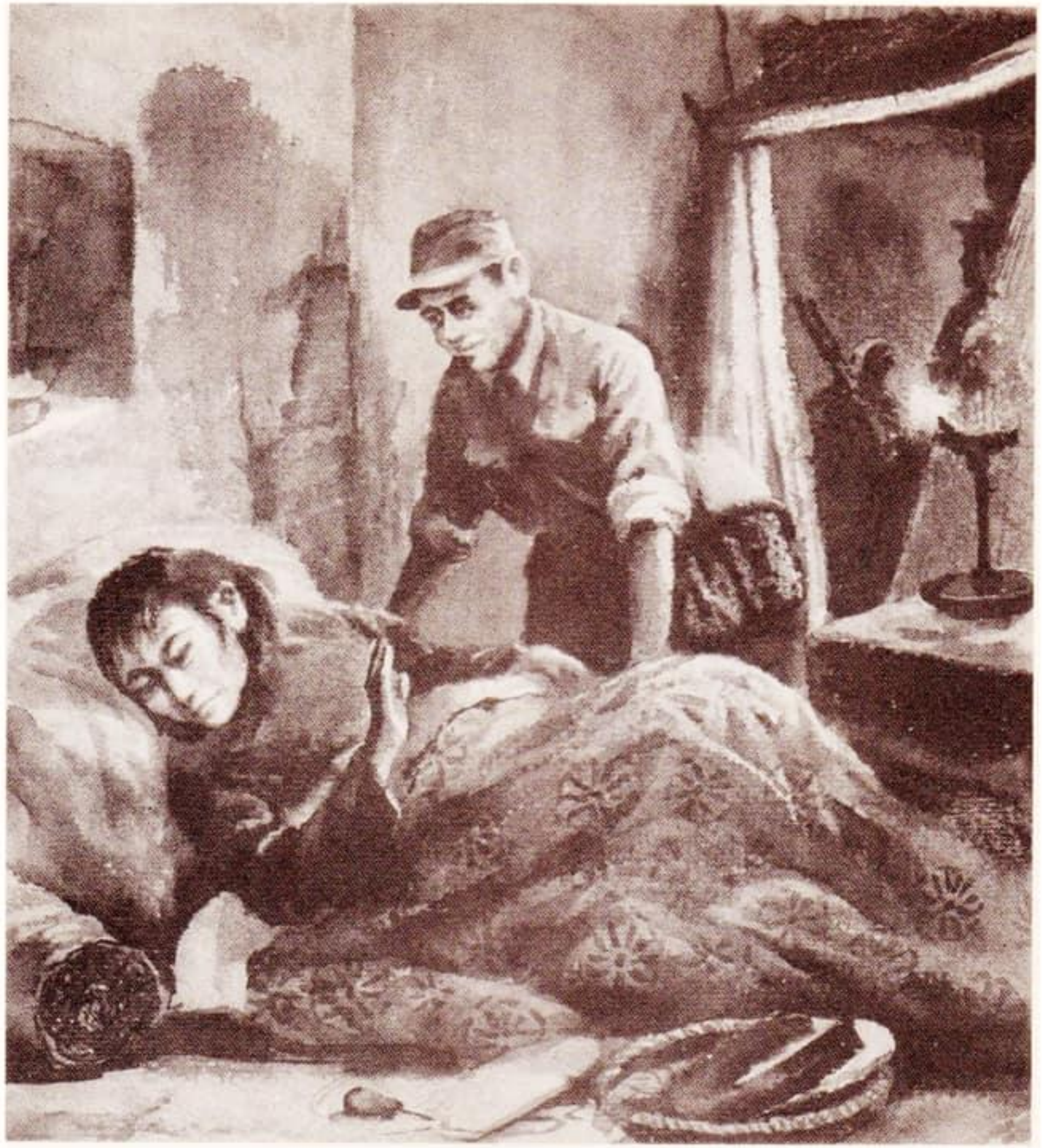
कोटनिस के "थैंक यू" कहने से पहले ही गुओ कमरे से बाहर निकल गई। कोटनिस दरवाज़े से बाहर भागे और वो गुओ के शरीर को निहारते रहे। उनके दिल में प्यार की आग जल रही थी।



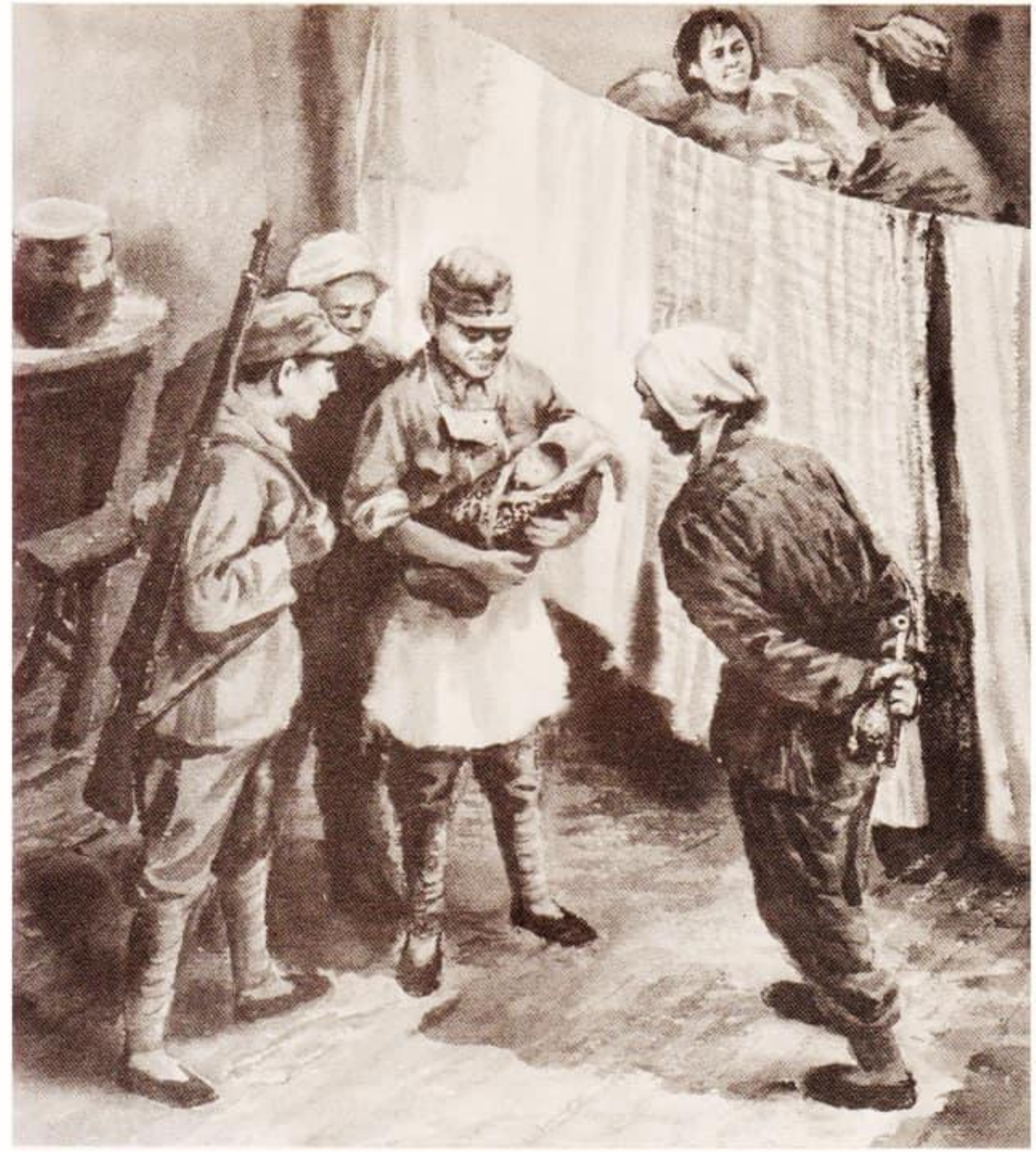
जापानी हमलावरों की गोलियों ने सुबह की शांति तोड़ी, और दुश्मन का सफ़ाई का ऑपरेशन शुरू हो गया। कोटनिस, जो उस समय मिलिट्री इलाके में एक मीटिंग में थे, तुरंत हॉस्पिटल वापस गए और उन्होंने मरीज़ों और लोकल लोगों को सुरक्षित निकालने का इंतज़ाम किया।



रास्ते में कोटनिस को पास से कराहने की आवाज़ सुनाई दी। यह कौन हो सकता है? उन्होंने अपना घोड़ा सड़क से हटाया और कराहने वाली आवाज़ का पीछा किया।



वह एक औरत निकली जिसे बच्चा होने वाला था। कोटनिस ने अपने बॉडीगार्ड से उसे स्ट्रेचर पर रखने को कहा, लेकिन औरत ने हाथ हिलाकर उन्हें रोका और कहा कि वो उसे वहीं छोड़ दें। नहीं तो, दुश्मन उन्हें घेर लेंगे। कोटनिस ने कहा: "हम आठवीं रूट आर्मी के डॉक्टर हैं, और हम तुम्हें यहाँ अकेला नहीं छोड़ सकते!"



उसे सुरक्षित जगह ले जाया गया जहां उसने एक सुंदर बच्ची को जन्म दिया। औरत ने कोटनिस को धन्यवाद दिया, जबकि उसके आस-पास के लोग मुस्कुराए और उन्होंने छोटी बच्ची को चीन और भारत के बीच दोस्ती का “फूल” कहा।



लड़ाई चलती रही और कोटनिस अपने लोगों को एक दूर पहाड़ी इलाके में ले गए। पतझड़ की बारिश में कोटनिस ने अपनी पुआल की टोपी एक घायल सैनिक को थमा दी जिसके कारण वो खुद भीग गए।



लेकिन दुश्मन ने उन्हें देख लिया और उनके कैंप पर बमबारी कर दी। कुछ लोग घायल हो गए और कुछ मर गए। कोटनिस और बाकी बचे लोगों ने, मरे हुए लोगों को दफ़नाया और वो फिर मज़बूती से अपने रास्ते पर चल पड़े।



तभी एक सैनिक रोंगझेन का संदेश लेकर आया। उसमें लिखा था कि वाइस सेक्रेटरी-जनरल बुरी तरह घायल हो गए हैं और उन्होंने मदद मांगी है।



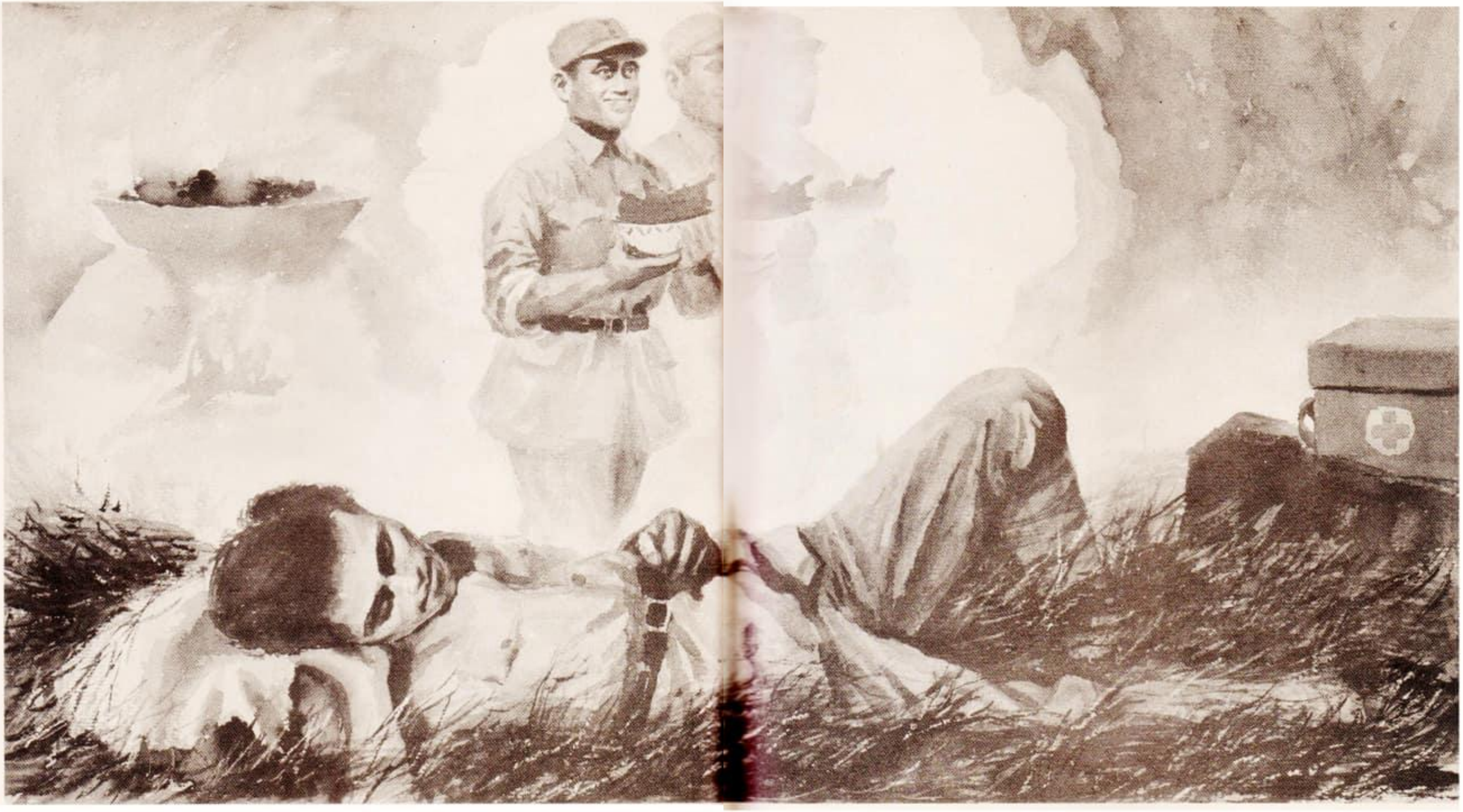
कोटनिस एक इंटर्न और कई नर्सों के साथ तुरंत दुर्घटना वाली जगह पर गए। उन्होंने घायल आदमी को इमरजेंसी ट्रीटमेंट दिया और फिर उसे झाड़ियों से भरे रास्ते से वापिस लाए।



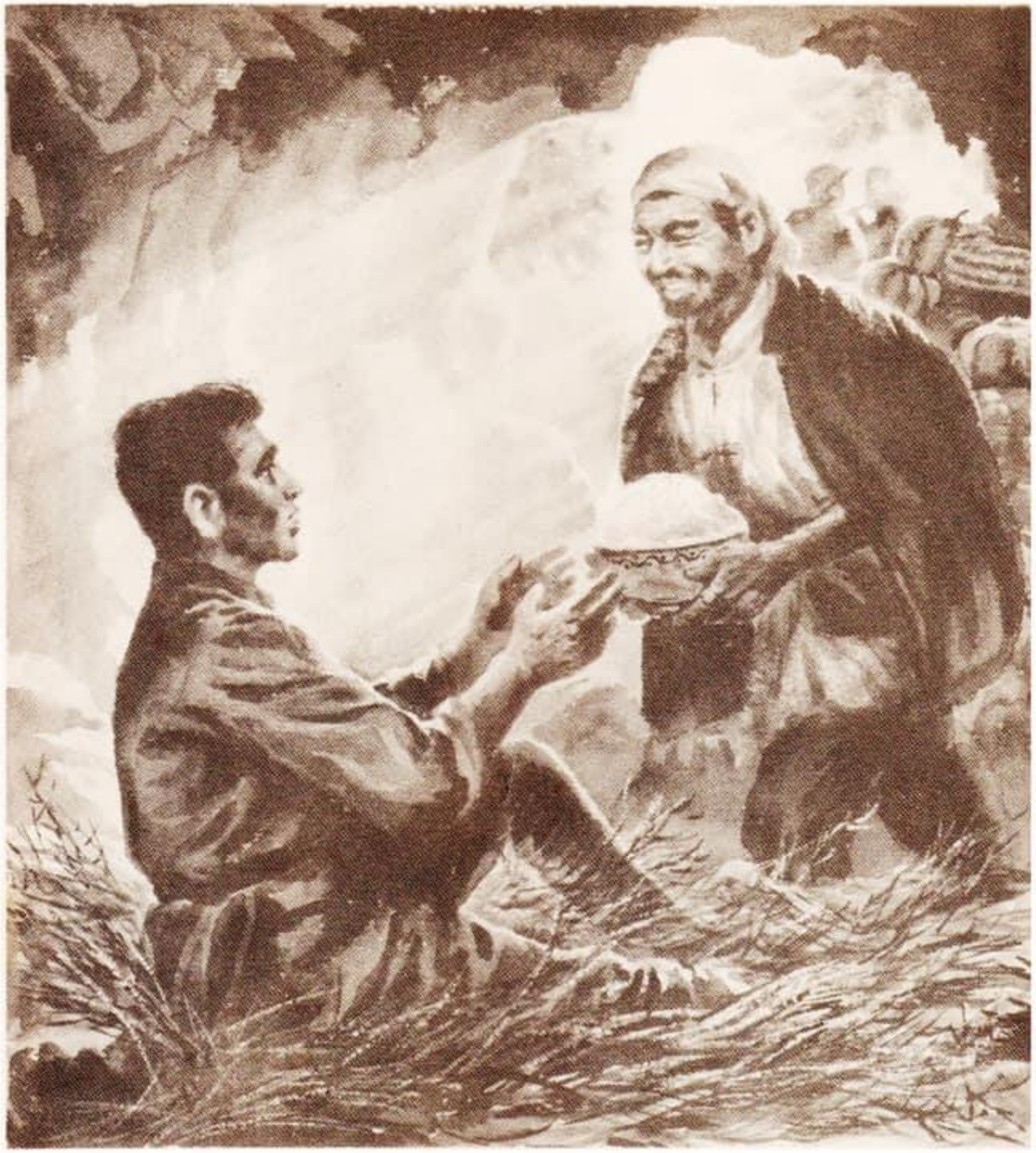
रास्ता और मुश्किल होता गया, और वे सब थक गए थे। कोटनिस का भी बुरा हाल था, उन्हें चक्कर आ रहा था।



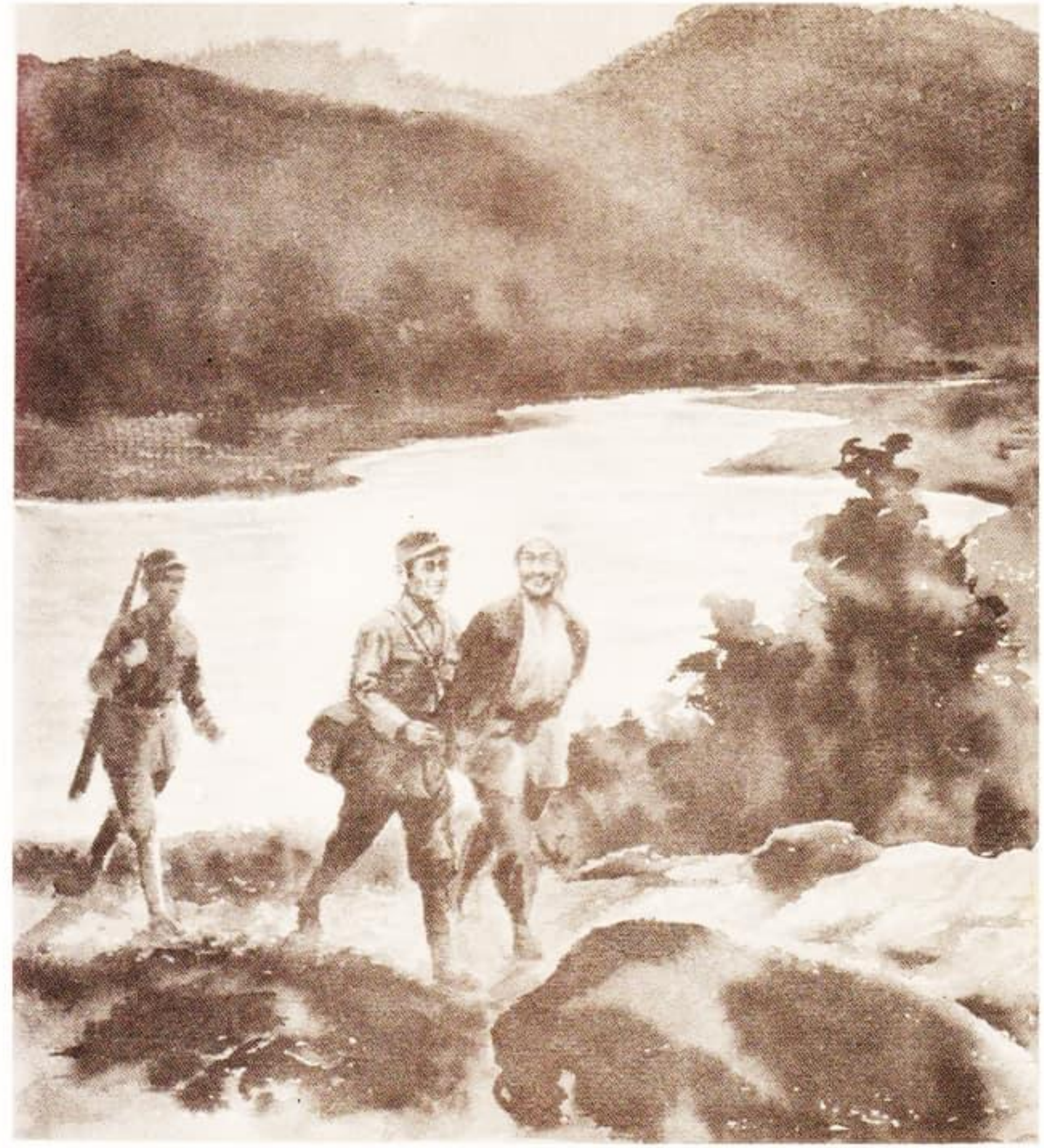
लेकिन वे एक पल के लिए भी आराम नहीं कर सकते थे; अगर वे चलना बंद कर देते, तो फिर वो सो जाते। कोटनिस ने इंटरनेशनेल गाना शुरू किया: "उठो! सब लोग जो गुलाम नहीं बनना चाहते..." एक आवाज़ आई और फिर दूसरी। इस गाने ने उन्हें अपना मार्च जारी रखने का आत्मविश्वास और ताकत दी।



आखिरकार उन्हें एक गुफा में पनाह मिली। कोटनिस ने पहले घायल आदमी को देखा, और उसके बाद वह सूखी घास पर सो गए। उन्होंने एक सपना देखा: उनके सामने लजीज़, पके हुए मटन का एक बर्तन था। लेकिन वो अपने मरीज़ के लिए उस मटन का कटोरे को ले गए....



अचानक कदमों की आहट से वो जाग गए। एक ईमानदार दिखने वाला किसान बर्फ़ जैसा सफ़ेद नमक का कटोरा लिए उसके सामने खड़ा था, और कई किसान कद्दू लिए उसके पीछे-पीछे चल रहे थे। कोटनिस भावुक हो गए और उन्होंने मन ही मन कहा: "ये लोग, यही असली लोग हैं!"



वाइस सेक्रेटरी-जनरल की हालत दिन-ब-दिन बेहतर होती जा रही थी। कोटनिस के लिए अब आस-पास के गांवों में जाकर बीमारों की देखभाल करके लोगों की मेहरबानी का बदला चुकाने का समय था। एक दिन उन्हें गुफा से दस किलोमीटर दूर एक गांव में एक मरीज को देखने के लिए बुलाया गया।



कोटनिस ने पूरी रात वहीं बिताई। सुबह-सुबह जब वह गुफा में लौटे, तो वो खुद गिर पड़े। इंटर्न दौड़कर उसके पास गया और देखा कि कोटनिस का मुंह कसकर बंद था, और उनके हाथ-पैर फड़क रहे थे, और उनकी पुतलियाँ फैली हुई थीं।



मिर्गी! इंटर्न ने तुरंत बीमारी का पता लगा लिया। उसे याद आया कि कोटनिस ने एक बार अपने स्टूडेंट्स को टेपवर्म का सैंपल दिखाया था। उन्हें पता था कि उन्हें खुद भी टेपवर्म है, लेकिन उन्हें यह नहीं पता था कि उन्हें मिर्गी भी है। इंटर्न ने खुद से कहा, "उन्होंने हमें यह बात पहले क्यों नहीं बताई?"



जब वाइस सेक्रेटरी-जनरल ने यह सुना, तो उन्होंने कोटनिस से कहा कि उन्हें मरीज़ों के लिए बनाया गया खास भोजन खाना चाहिए। लेकिन कोटनिस ने उनकी बात नहीं सुनी और जवाब दिया, "क्योंकि आप यहां एक मरीज़ के तौर पर हैं, इसलिए मैं आपसे बड़ा हूं। इसलिए आपको मेरी बात माननी ही होगी।"



जब सेना ने अपना "एंटी-मॉपिंग-अप" ऑपरेशन खत्म कर लिया, तो कोटनिस और गुओ किंगलान ने शादी की। कमरे को चीनी परंपरा के अनुसार सजाया गया था और खिड़की पर "खुशी" के पेपरकट चिपकाए गए; उनके बिस्तर पर मूंगफली और खजूर रखे गए थे, इस उम्मीद में कि उनका जल्द ही बच्चा होगा। बूढ़े लोग हँसे, और उन्होंने कोटनिस को चीन का दामाद बताया।



जब बधाई देने आए लोग चले गए, तो कोटनिस सोच में डूबे हुए लग रहे थे। उन्होंने अपनी माँ का दिया हुआ चाँदी का गिलास निकाला, जिस पर लिखा था "अपनी माँ को कभी मत भूलना", और उन्होंने चीन आने से पहले ली गई अपने परिवार की तस्वीरें देखीं। उन्होंने अपनी पत्नी से कहा, "किसी दिन हमें अपने घर इंडिया ज़रूर जाना चाहिए।"



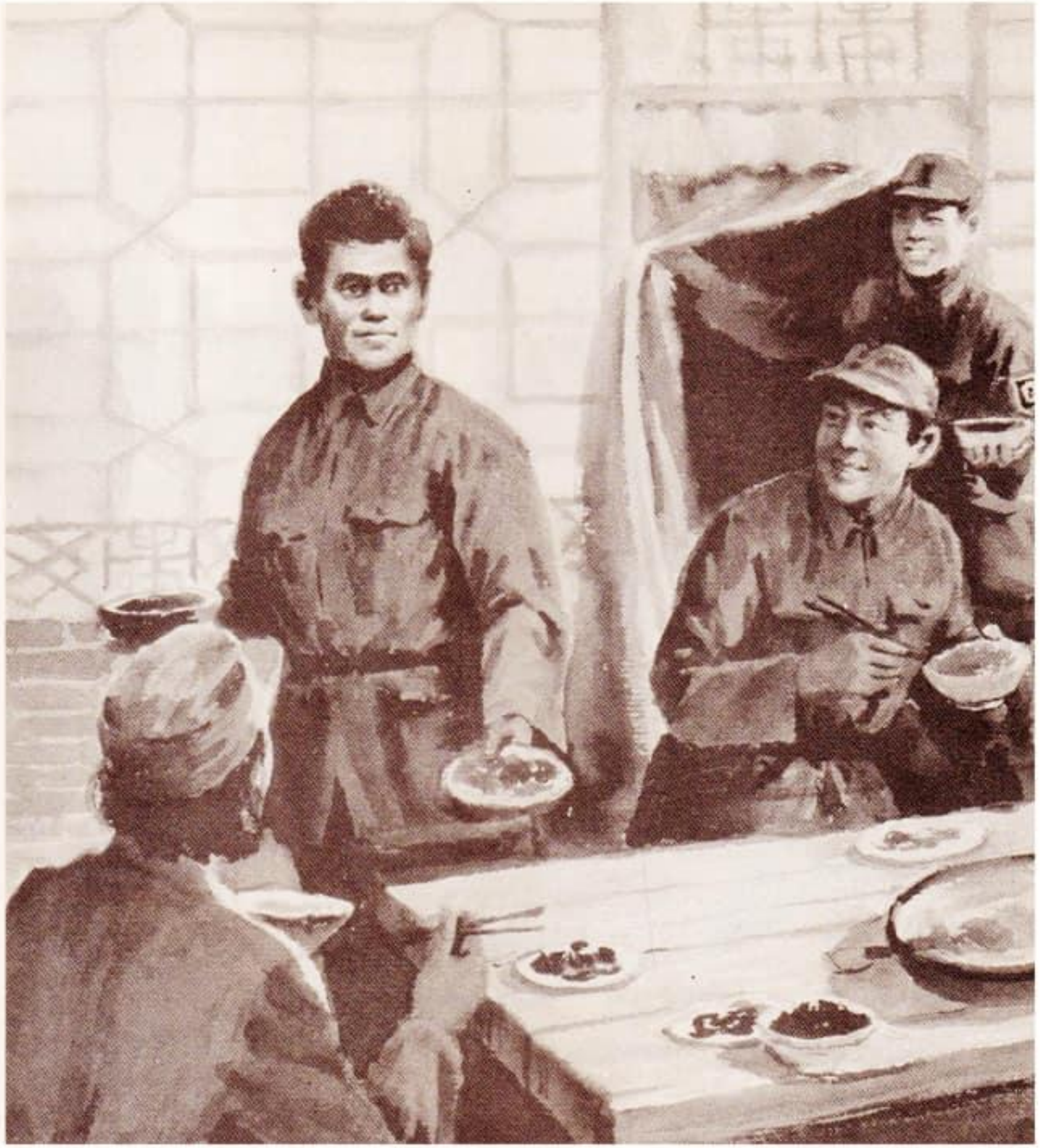
साल 1942 शांक्सी-कहार-हेबेई बॉर्डर एरिया के लिए सबसे मुश्किल समय था। पूरे एशिया पर कब्ज़ा करने के अपने सपने को पूरा करने के लिए, जापानियों ने उत्तरी चीन में अपने हमले और तेज़ कर दिए। बार-बार लड़ाई की वजह से आठवीं रूट आर्मी के पास खाने की इतनी कमी हो गई कि उन्हें छाल और पेड़ के पत्तों से अपनी भूख मिटानी पड़ी।



कोटनिस अपने चीनी साथियों की तरह ही बाजरा और काली बीन्स खाते थे। एक दिन, उनका एक साथी खास तौर पर उनके लिए चावल का लंचबॉक्स लाया; लेकिन कोटनिस, जो आमतौर पर बहुत शांत स्वभाव के थे, गुस्सा हो गए। उन्होंने कहा: "मैं नहीं चाहता कि मेरे साथ एक मेहमान जैसा बर्ताव किया जाए!"



लेकिन, विदेशी होने के नाते, उन्हें फिर भी चावल और आटे का एक हिस्सा दिया जाता था। उन्होंने खाना ले लिया, लेकिन उन्होंने वो खाना अपने मकान मालिक के बीमार बच्चे को दे दिया। वह अक्सर अपने गंभीर रूप से घायल मरीज़ों के लिए अपने खर्चे से पौष्टिक खाना खरीदते थे।



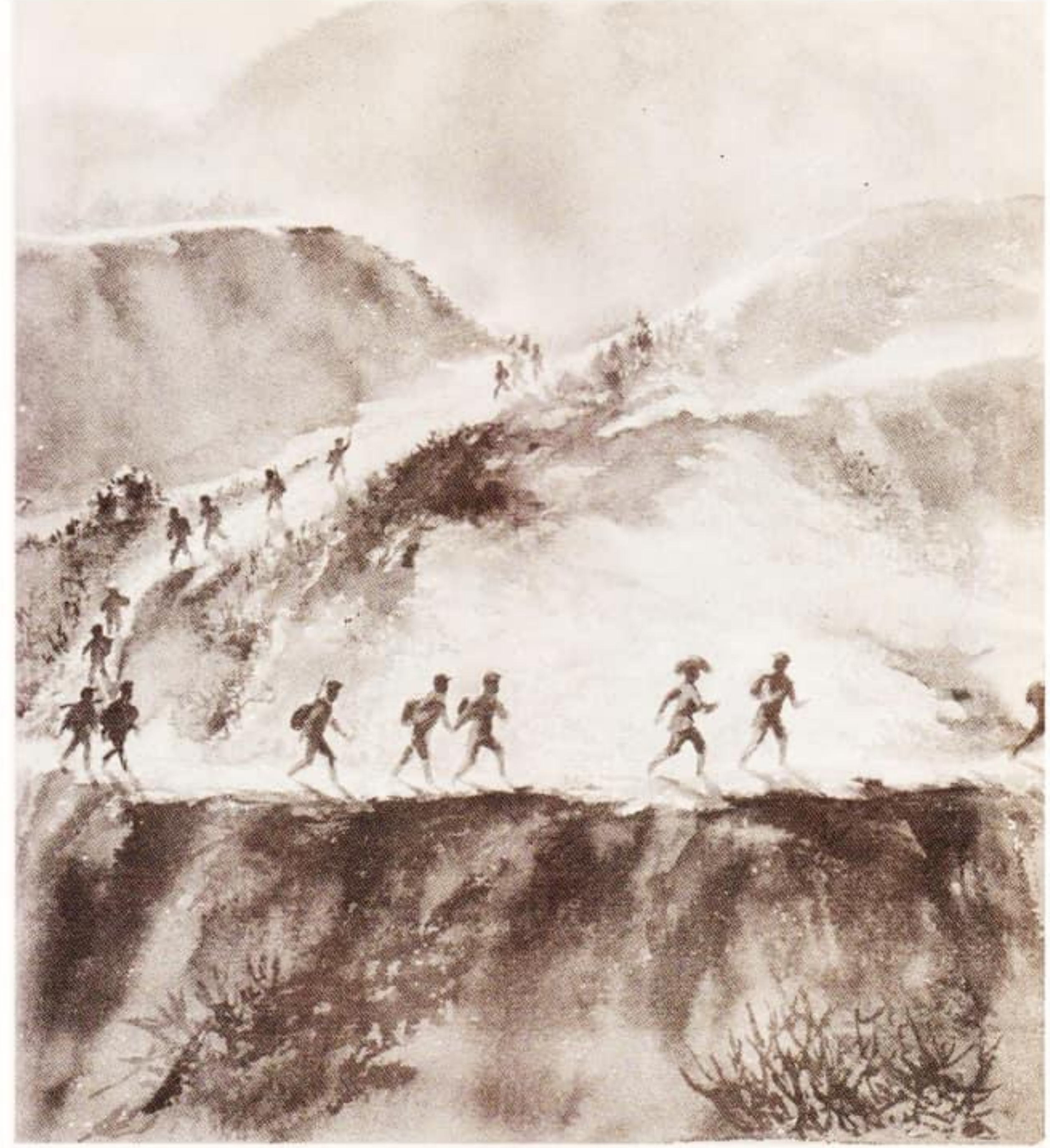
उस मुश्किल समय में वे बहुत कम मीट खाते थे। एक बार, जब मीट परोसा गया, तो कोटनिस ने अपना हिस्सा कुछ नर्सों को दे दिया जिन्हें मलेरिया था। नर्सें उस मीट को खाना नहीं चाहती थीं, लेकिन कोटनिस ने ज़ोर दिया कि वे उसके आखिरी निवाले तक को खाएं।



नाकाबंदी तोड़ने के लिए, स्कूल और अस्पताल के नौजवानों को दुश्मनों के कब्ज़े वाले इलाकों से अनाज ले जाने के लिए इकट्ठा किया गया। कोटनिस उनके साथ जुड़ने ही वाले थे कि जियांग यिझेन ने उन्हें लाइन में देखा।



जियांग यिझेन नहीं चाहते थे कि कोटनिस उनके साथ जाए; लेकिन कोटनिस ने कहा: "मैं हॉस्पिटल का डायरेक्टर हूँ। क्या मुझे अपने साथियों के साथ खतरे में शामिल नहीं होना चाहिए!" अंत में जियांग यिझेन को उन्हें जाने देना ही पड़ा।



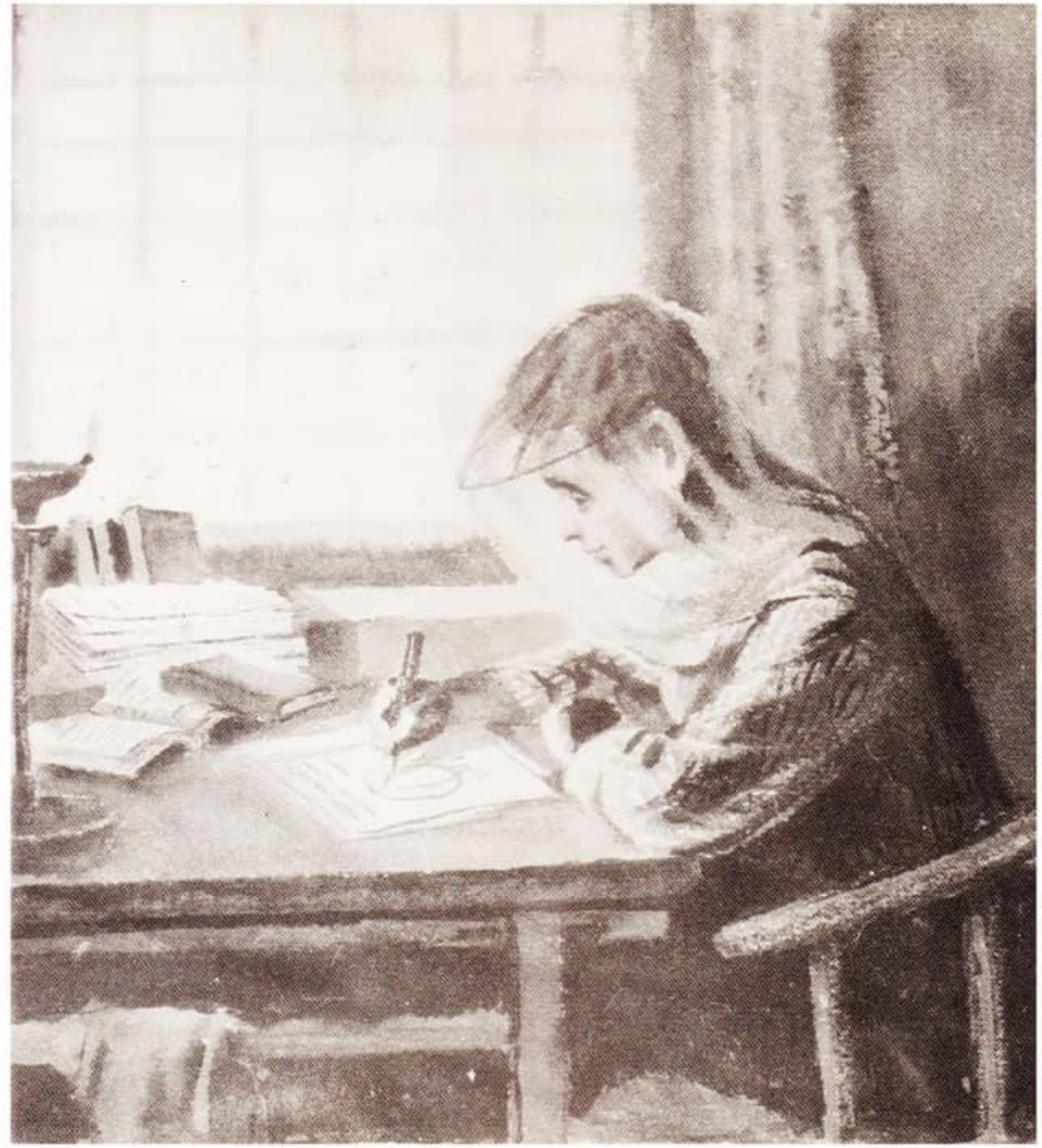
पूरी रात चलने के बाद, वे अपनी मंज़िल पर पहुँचे। वापस आते समय वे बहुत थक गए थे। उनका हौसला बढ़ाने के लिए, कोटनिस ने अपने सिर पर अनाज का एक बोरा रखा और उन्होंने एक भारतीय लोकगीत गाया। थकान के बावजूद लोग हँसे बिना नहीं रह सके।



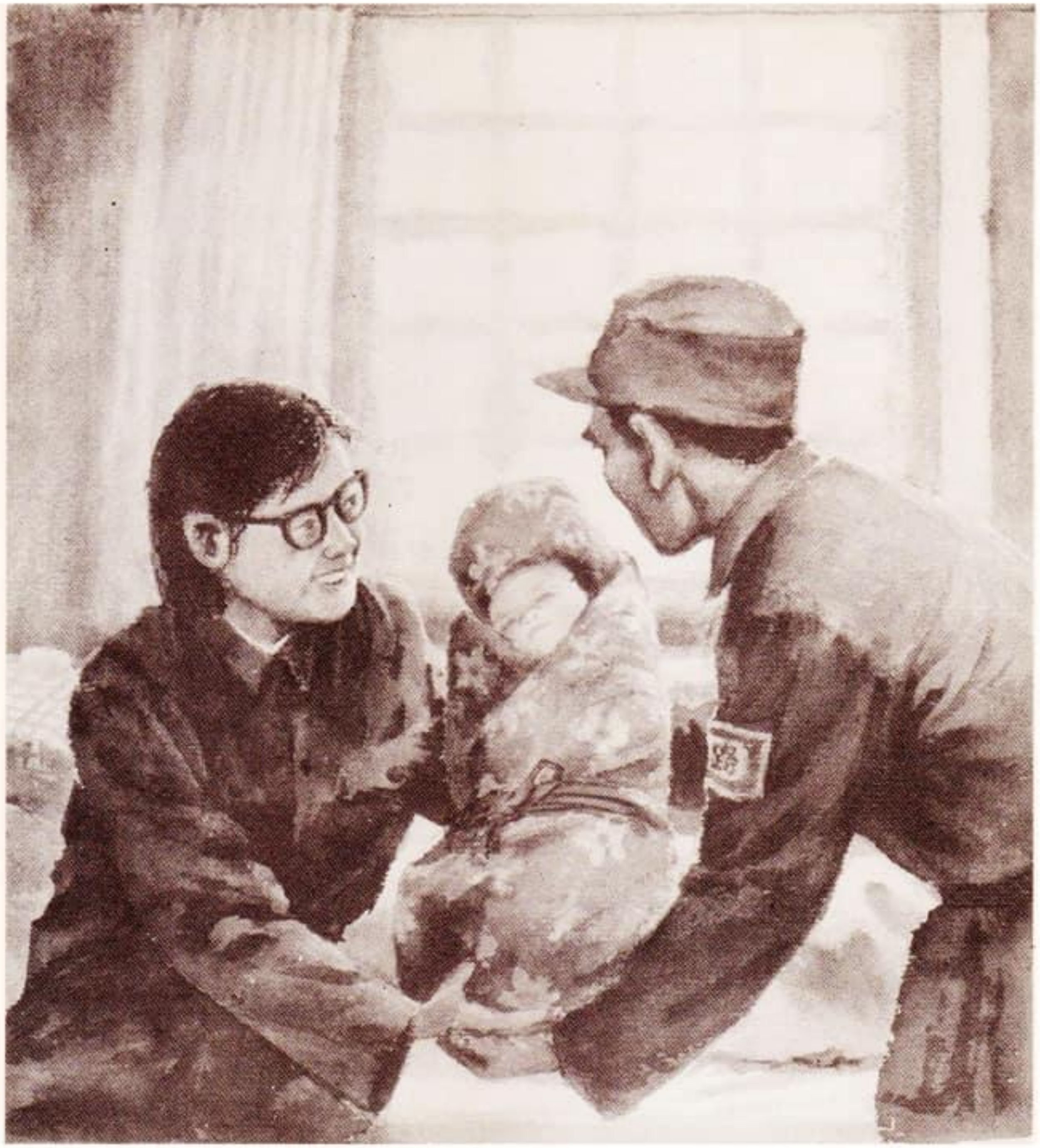
हालाँकि कोटनिस आशावादी थे, लेकिन उनकी बीमारी बिगड़ती जा रही थी। कमांडर-इन-चीफ़, नी रोंगज़ेन ने उनसे इलाज के लिए कहीं और जाने का आग्रह किया। कोटनिस ने कहीं और जाने से इनकार कर दिया और बड़े ही अर्थपूर्ण ढंग से कहा, "अगर मेरी मृत्यु यहीं होती है, तो भारत के लोगों और मेरे रिश्तेदारों को मुझ पर गर्व होगा।"



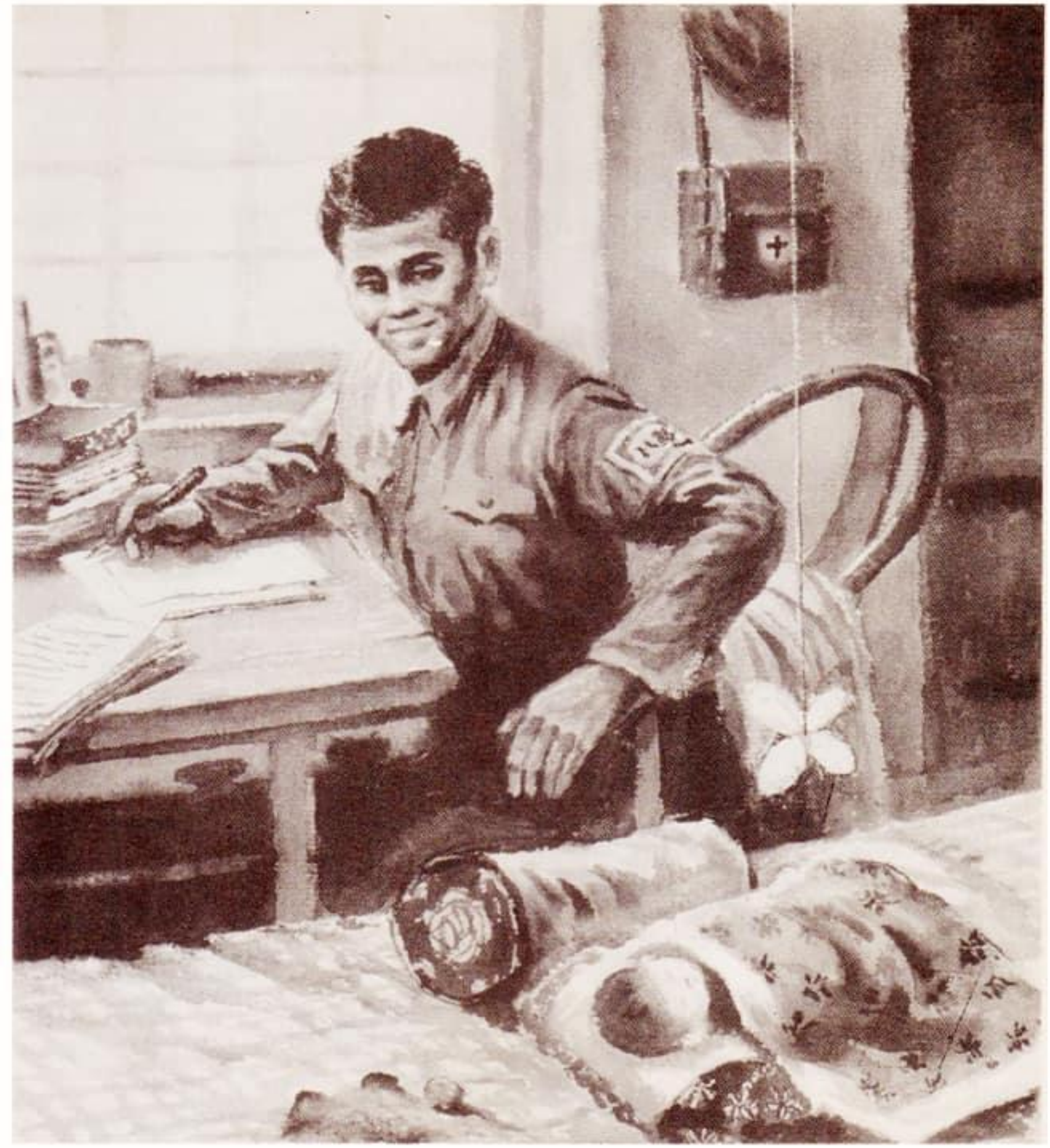
कम्युनिस्ट पार्टी में शामिल होने के लिए अर्जी देने के तुरंत बाद, उन्हें पार्टी मेंबर के तौर पर स्वीकार कर लिया गया। जियांग यिझेन, जिन्होंने पार्टी मेंबरशिप के लिए उनकी सिफारिश की थी, का हाथ पकड़कर कोटनिस ने उत्साह से कहा, “मैं एक समान, आज़ाद और खुशहाल चीन बनाने के लिए चीनी लोगों के साथ मिलकर लड़ूंगा।”



अब कोटनिस ने और भी ज़्यादा मेहनत की। 1942 की गर्मियों में, उन्होंने 'जनरल इंट्रोडक्शन टू सर्जरी' नाम की एक किताब लिखना शुरू की। मौसम नम और ह्यूमिड था। मच्छरों को दूर रखने के लिए, उन्होंने अपने सिर पर जाली का एक पर्दा पहना।



अगस्त में, गुओ किंगलान ने एक लड़के को जन्म दिया जो अपने पिता जैसा ही दिखता था, उसका चेहरा सांवला और आँखें गहरी थीं। कोटनिस ने अपने छोटे बेटे से बार-बार कहा: "बड़े हो जाओ, जल्दी से बड़े हो जाओ, और अपनी दादी से मिलने भारत जाओ।"



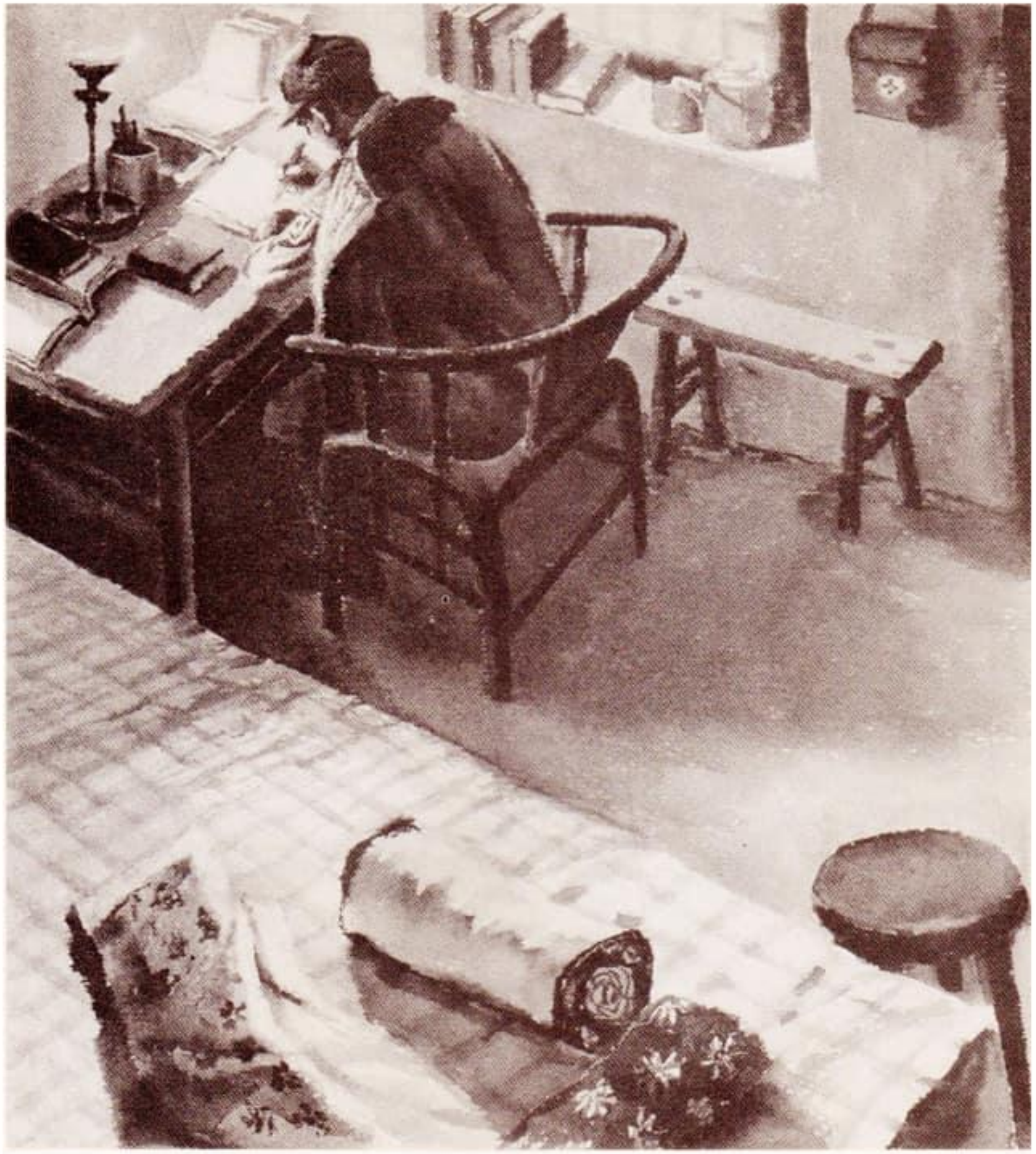
उन्होंने पतझड़ में अपनी किताब “जनरल इंट्रोडक्शन टू सर्जरी” पूरी की और फिर “सर्जरी इन डिटेल” पर काम करना शुरू किया। वह अपने छोटे बेटे से बहुत प्यार करते थे। लेकिन अपने बच्चे के माथे को चूमने के बाद, वह तुरंत काम पर वापस चले जाते थे। वह अपनी नई किताब प्रकाशित करके अपने बेटे के जन्म का जश्न मनाना चाहते थे।



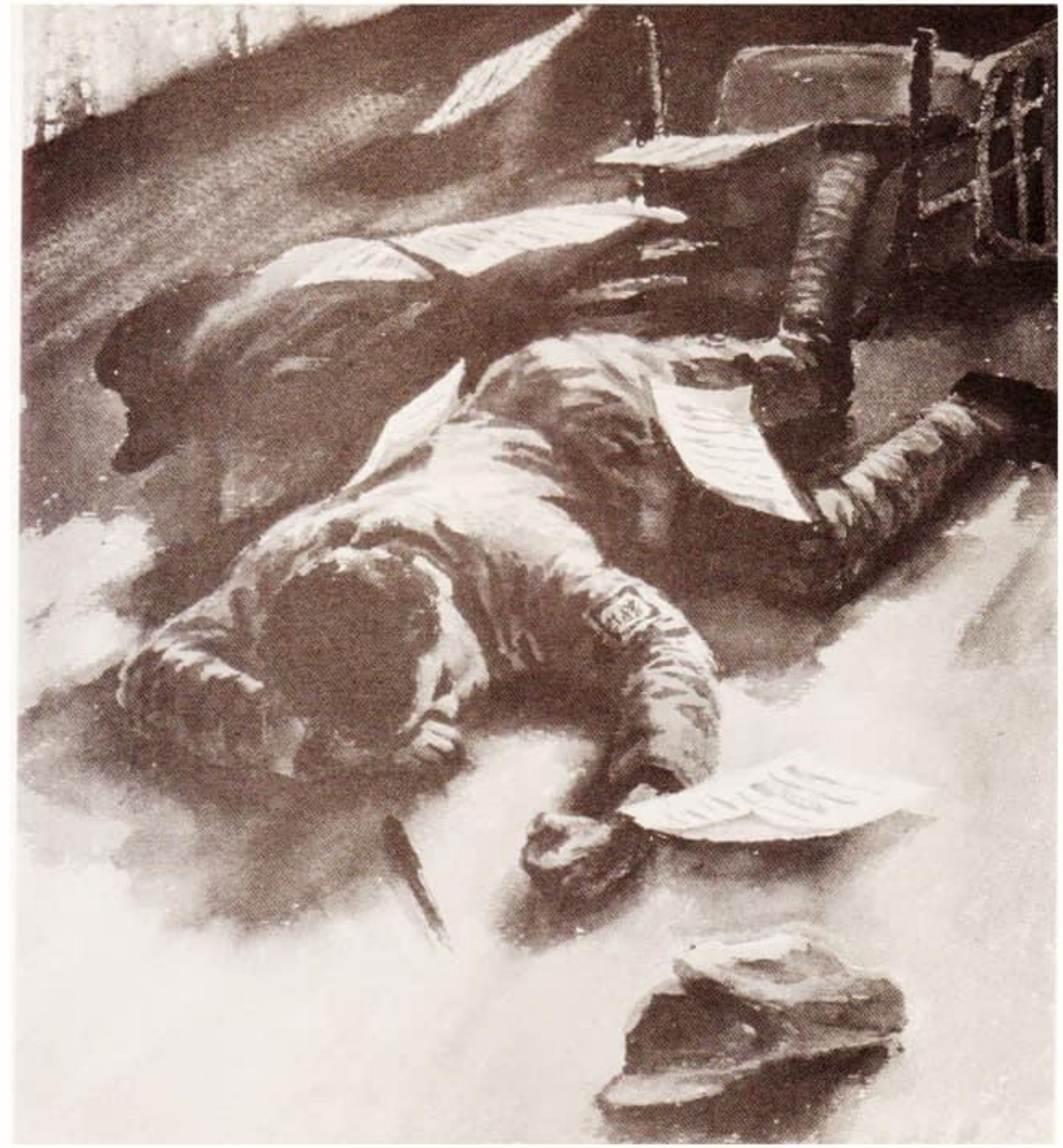
8 दिसंबर 1942 को, भयंकर बर्फीले तूफान में, कोटनिस अपने असिस्टेंट के साथ एक गांववाले का ऑपरेशन करने के लिए पास के गांव गए।



वह पूरी सुबह वहीं रहे और दोपहर को वापस आए। जैसे ही वह आराम करने के लिए लेटे, उन्हें दूसरे मरीजों को देखने के लिए कहा गया। वह फिर से बर्फ़ में निकल पड़े। वो अभी भी अपने कोट के बटन लगा रहे थे।

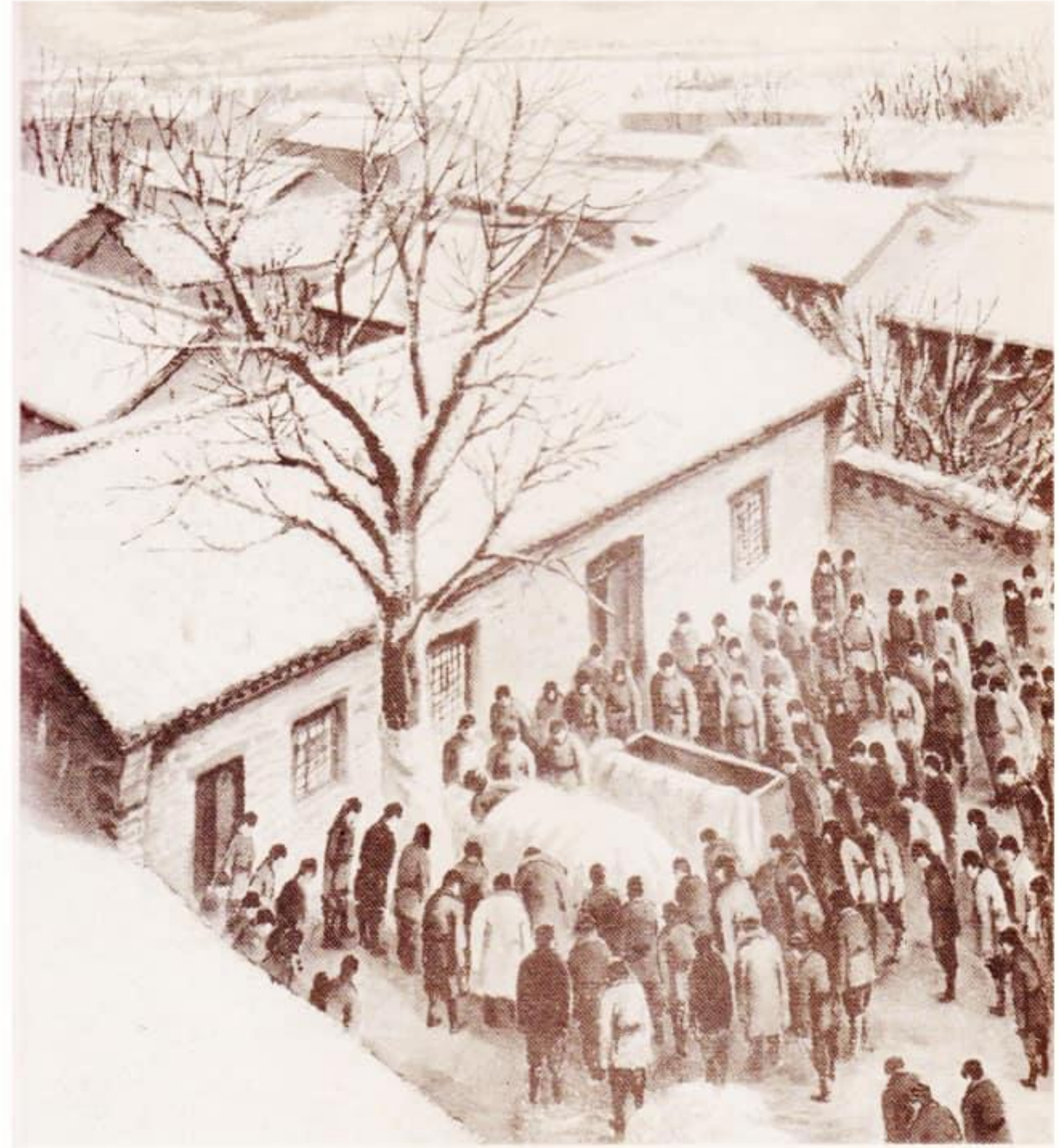


रात के खाने के बाद, कोटनिस ने अपने एक लीडर से अपने काम के बारे में बात की, और फिर वह अपने लिखने के काम में लग गए। ठंड की वजह से उन्हें बार-बार अपनी उंगलियों पर फूंक मारनी पड़ रही थी।



कोटनिस ने एक पेज के कोने पर 177 नंबर लिखा ही था कि वह ज़मीन पर गिर पड़े। पेन उसकी उंगलियों से फिसल गया, और सारे पन्ने उसके आस-पास बिखर गए। यह अब तक का सबसे बुरा मिर्गी का दौरा था जो उन्हें पड़ा था।





जब वह होश में आए, तो उन्होंने अपने आस-पास कई जाने-पहचाने चेहरे देखे। उन्होंने उठकर बैठने और उनका शुक्रिया अदा करने की कोशिश की, लेकिन वह इतना थक गए थे कि उनका सिर बार-बार पीछे को झुक रहा था। उन्हें कुछ भी बोलने में मुश्किल हो रही थी: "मुझसे मिलने आने के लिए धन्यवाद।"

बचाव के सारे तरीके बेअसर साबित हुए। 9 दिसंबर 1942 को सुबह 6:15 बजे उनकी कीमती ज़िंदगी का अंत हुआ। वे अपने साथियों, अपनी पत्नी और अपने 3.5 महीने के बेटे, यिन हुआ (मतलब इंडिया-चाइना) को अपने पीछे छोड़ गए। कोटनिस की मौत के समय उनकी उम्र सिर्फ़ 32 साल थी।



यानान के लोगों ने कोटनिस के सम्मान में एक चीनी दफ़नाने की रस्म की, और जापानियों की बमबारी के दौरान भी उनके लिए एक स्मारक बनाया।



पूरे चीन में लोग बहुत दुखी हुए। चेयरमैन माओ ज़ेडॉन्ग, ने उनके लिए एक शोकगीत लिखा, और झू दे, यानान में उनके अंतिम संस्कार में शामिल हुए और वहां उन्होंने एक यादगार भाषण दिया। झोउ एनलाई और सूंग चिंग लिंग, जो उस समय चोंगकिंग में थे, ने कोटनिस के परिवार और इंडिया नेशनल कांग्रेस को सहानुभूति के, अलग-अलग संदेश भेजे।



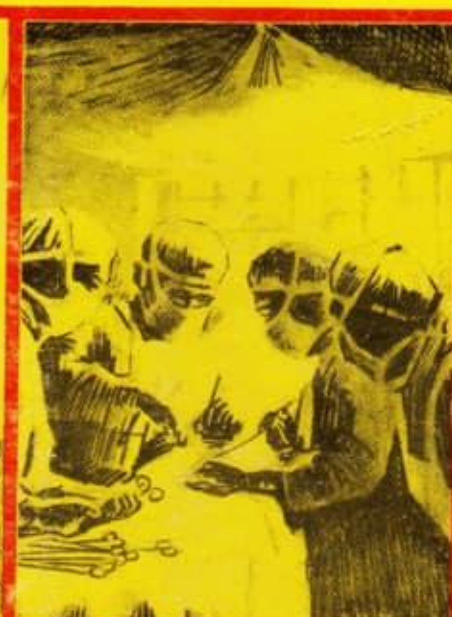
1976 में, उनकी मौत की 34वीं सालगिरह पर, बेथ्यून इंटरनेशनल पीस हॉस्पिटल में कोटनिस मेमोरियल हॉल का उद्घाटन किया गया, जिसके वे पहले डायरेक्टर थे। डॉ. द्वारकानाथ शांताराम कोटनिस की यादें हमेशा चीनी लोगों के दिलों में रहेंगी।

बंदर श्रृंखला

पुराने चीनी फैंटेसी नॉवेल 'जर्नी टू द वेस्ट' पर आधारित पिक्चर बुक्स की एक सीरीज़, में उन राक्षसों के बारे में बताया गया है जिन्होंने तांग पुजारी - ज़ुआनज़ैंग को, थंडर मठ, भारत तक बौद्ध धर्मग्रंथ लाने से रोकने की कोशिश की थी।

नॉवेल का असली हीरो वह जुगाड़ू, बहादुर और मज़ेदार बंदर था, जिसे चीनी रीडर्स चार सौ सालों से पसंद करते रहे हैं। इस सीरीज़ की चौंतीस किताबें पूरी तरह से रंगीन होंगी।







Paperback: ISBN 0-8351-1899-1